चक्र-पूजा के स्तोत्र

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

'चक्र-पूजा'

- भारतीय अध्यात्म विज्ञान के अनुसार 'मनुष्य' और 'शिव' में कोई वास्तविक भेद नहीं है।
- 'मनुष्य' ३६ तत्त्वों से बँधा हुआ होने के कारण 'शिव' से भिन्न, दुःखी, भयभीत, असहाय, अज्ञानी प्रतीत होता है।
- 'शिव'-स्वरूप (आनन्द-स्वरूप) को प्राप्त करने के लिए 'मनुष्यों' के पास 'तत्त्व'-रूपी ३६ सीढ़ियाँ हैं।
- ३६ तत्त्वों के द्वारा स्वयं सर्वज्ञ 'शिव'–अल्पज्ञ 'मनुष्य' बनते हैं। अतः हम अल्पज्ञ मनष्यों को पुनः 'शिव'-स्वरूप प्राप्त करना है, तो उक्त ३६ तत्त्वों का शोधन करना होगा।
- 'तन्त्रों' के अनुसार ३६ तत्त्व तीन प्रकार के हैं– १. आत्म-तत्त्व, २. विद्या-तत्त्व और ३. शिव-तत्त्व।
- १. शिव, २. शक्ति, ३. सदा-शिव, ४. ईश्वर और ५. शुद्ध विद्या–ये पाँच 'शिव'-तत्त्व हैं।
- १. माया, २. काल, ३. नियति, ४. कला, ५. विद्या, ६. राग और ७. पुरुष–ये सात 'विद्या'-तत्त्व हैं।
- १. प्रकृति, २. बुद्धि, ३. अहङ्कार, ४. मन, ५-९. पाँच ज्ञानेन्द्रिय, १०-१४. पाँच कर्मेन्द्रिय, १५-१९. पाँच तन्मात्राएँ और २०-२४ पाँच महा-भूत– ये २४ 'आत्म'-तत्त्व हैं।
- उक्त तीनों–१. 'आत्म'-तत्त्व, २. 'विद्या'-तत्त्व एवं ३. 'शिव'-तत्त्व के शोधन अर्थात् इनके वास्तविक परिचय से ही 'मनुष्य'–'शिव'-स्वरूप को हृदयङ्गम करने की ओर अग्रसर होता है।
- 'तन्त्रों' की 'चक्र-पूजा', 'पात्र-वन्दना', 'मण्डलार्चन' के द्वारा उक्त विज्ञान के अनुरूप मनुष्यों को एक सुन्दर ढङ्ग से तत्त्वों का शोधन कर साक्षात् 'शिव'-स्वरूप को प्राप्त करने की विधि बताई गई है।

शरीर-कञ्चुकितः शिवो जीवः । निष्कञ्चुकः पर-शिवः ।।

'चण्डी' : विशेष प्रस्तुति

चक्र-पूजा के स्तोत्र

पात्र-वन्दना

(कुण्डलनी-जागरण)

तत्त्व-शोधन

एवम्

मानसिक हवन

आदि-सम्पादक

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

अनुक्रम

चक्र-पूजा के स्तोत्र (पात्र-वन्दना)

चक्र-पूजा के स्तोत्र (पात्र-वन्दना) हिन्दी-भावानुवाद

दो शब्द

चक्र-पूजा के स्तोत्र का नया छठवाँ संस्करण

'**चक्र-पूजा**' या '**चक्रार्चन**' का विशेष महत्त्व है। यह अत्यन्त प्राचीन एवं अपने आप में सर्वथा विलक्षण पूजन-विधान है। यह विशिष्ट पूजा '**निशार्चन**', '**रहस्य-पूजा**', '**मण्डलार्चन**' आदि नामों से भी प्रसिद्ध है।

'**चक्र-पूजा**' का पूर्ण विधान '**श्रीबाला-नित्यार्चन**' जैसी '**पूजा-पद्धति**' की पुस्तकों से जाना जा सकता है। उसके अनुसार इष्ट-देवता की उपस्थिति में साधक परस्पर पूजन कर '**तर्पण-चर्वण**' करते हैं। '**चक्र-पूजा**' में इस अवसर पर जिन स्तोत्रों का पाठ साधकों को करना होता है, उन्हें ही पहले-पहल **चक्र-पूजा के स्तोत्र** नामक पुस्तक के रूप में '**कौल-कल्पतरु**' **पण्डित देवीदत्त शुक्ल** द्वारा व्यवस्थित ढङ्ग से संग्रहीत किया गया था।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि '**चक्र-पूजा**' के स्तोत्रों के अनेक '**पाठ**'-क्रम देखने को मिलते हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न '**गुरु**'-**परम्पराओं** के अन्तर्गत इसका प्रचलन विविध प्रकार से था। '**देवी-रहस्य**', '**कुलार्णव तन्त्र**', '**कौलावली निर्णय**' आदि ग्रन्थों में इसकी चर्चा भिन्न-भिन्न प्रकार से हुई है। **शुक्ल जी** को '**वैदिक पात्र-वन्दना**' की पाण्डुलिपि भी प्राप्त हुई थी, जिससे इसकी प्राचीनता भली-भाँति स्पष्ट होती है। यह प्राचीन '**वैदिक पात्र-वन्दना**' प्रस्तुत संस्करण के आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित है। पाठक बन्धु उसका अवलोकन कर सकते हैं और यह हृदयङ्गम कर सकते हैं कि तब उसका स्वरूप कैसा था?

संक्षेप में, विभिन्न पाण्डुलिपियों के आधार पर **शुक्ल जी** ने '**चक्र-पूजा**' के स्तोत्रों को व्यवस्थित-से-व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने का जो महान् कार्य किया था, उसका सभी साधकों ने हृदय से स्वागत किया और **चक्र-पूजा के स्तोत्र** के क्रमशः पाँच संस्करण प्रकाशित हुए।

पाँचवाँ संस्करण समाप्त होने पर '**चण्डी**'-शोध-पूर्ण आध्यात्मिक पुस्तक-माला के द्वारा इसका **नया छठवाँ संस्करण** प्रकाशित हो रहा है। आशा है कि प्रस्तुत नए संस्करण से अत्यन्त प्राचीन एवं विलक्षण '**चक्र-पूजा**' (**पात्र-वन्दना**) को अधिक-से-अधिक बन्धु न केवल जानेंगे अपितु उससे लाभ भी उठाएँगे।

–ऋतशील शर्मा

श्रीचण्डी-धाम
अक्षय तृतीया, २०७१ वि. (०१ मई, २०१४)

'पात्र-वन्दना' कैसे करें?

'चक्र-पूजा' (पात्र-वन्दना) 'तन्त्र'-साधना का सर्व-श्रेष्ठ अर्चन है। तन्त्रों में इस अर्चन की जो पद्धति दी गई है तथा इसके सम्बन्ध में जो नियमादि निर्दिष्ट किए गए हैं, उन सब पर ध्यान-पूर्वक विचार करने से यह अपने आप ही प्रगट हो जाता है कि **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** वास्तव में एक **अत्यन्त सार-गर्भित दिव्य अर्चन** है।

उक्त **दिव्य अर्चन** पहले अपने देश में विविध स्थानों पर वास्तविक रूप में यथा-विधान होता था, परन्तु आज यह अपने मूल रूप में बहुत कम देखने को मिलता है। इसका मुख्य कारण यही है कि **'गुरु-परम्परा, 'कुल-परम्परा'** का अस्तित्व आज नाम-मात्र ही है। **'गुरु'-परम्परा, 'कुल'-परम्परा** के क्रमश: विलुप्त होने के कारण ही अत्यन्त प्राचीन **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** विधि-पूर्वक नहीं हो रही है।

ऐसी स्थिति में, एक बड़ी संख्या में आज जिज्ञासु बन्धुओं के मन में यह प्रश्न उठना भी स्वाभाविक है कि विधि-पूर्वक **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** को कैसे करें? दूसरे शब्दों में, **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** को अपने देश में सिखाने हेतु एक सुदृढ़ व्यवस्था होने की बहुत बड़ी आवश्यकता है।

अस्तु! जब तक देश में **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** के **'ज्ञान'** व **'क्रिया'**-दोनों पक्षों को विधिवत् बताने की समुचित व्यवस्था नहीं होती, तब तक जिज्ञासु बन्धु इसे **'संक्षिप्त रूप'** में अपना कर लाभ उठा सकते हैं। अथवा, इसके विभिन्न **'स्तोत्रों'** का **'पाठ'**-मात्र कर लाभ उठा सकते हैं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि **श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग** में **श्रीकुलभूषणानन्दनाथ** जी के आचार्यत्व में इधर **'संक्षिप्त चक्रार्चन'** की प्रामाणिक विधि हेतु, **'गुरु-मण्डल'** की कृपा से कुछ विशेष उपलब्धियाँ हुई हैं। इन उपलब्धियों के फल-स्वरूप **'मूल चक्रार्चन'** के नाम से एक पद्धति तैयार हुई है, जो अलग से प्रकाशित भी हो चुकी है। इस **'मूल-चक्रार्चन'** के अनुसार प्रारम्भिक स्थिति में **'पाँच पात्र-वन्दना'** करके इस **दिव्य अर्चन** को न केवल सीखा जा सकता है अपितु उसकी दिव्य अनुभूतियों को भी उपलब्ध किया जा सकता है।

अन्त में, **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** को कैसे करें-इसे स्पष्ट करने के उद्देश्य से हम यहाँ कुछ बातों का उल्लेख करना आवश्यक समझते हैं। आशा है कि इससे भी **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** की विधि को समझने में विशेष सुविधा होगी। यथा-

- **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** एक प्रकार का **सामूहिक अर्चन** है। **माँ भगवती** के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखनेवाले इसमें सामूहिक रूप से बैठकर **अर्चन (तर्पण-चर्वण)** करते हैं।
- **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** में ज्येष्ठता के अनुसार क्रम से बैठना चाहिए।
- **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** में **गुरु, आचार्य अथवा ज्येष्ठ साधक** की प्रधानता होती है। **तत्त्वों के शोधन** के समय मुख्य रूप वे लोग ही **'पात्र-वन्दना'** पढ़ते हैं, दूसरे लोग ध्यान-पूर्वक **'वन्दना'** का अनुसरण मात्र करते हैं।
- **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** की सारी व्यवस्था में **गुरु, आचार्य अथवा ज्येष्ठ साधक** के आदेश का पालन होता है। कोई त्रुटि या कमी होने पर भी किसी को कुछ कहने का अधिकार नहीं होता। दूसरे शब्दों

दो शब्द

चक्र-पूजा के स्तोत्र का नया छठवाँ संस्करण

'**चक्र-पूजा**' या '**चक्रार्चन**' का विशेष महत्त्व है। यह अत्यन्त प्राचीन एवं अपने आप में सर्वथा विलक्षण पूजन-विधान है। यह विशिष्ट पूजा '**निशार्चन**', '**रहस्य-पूजा**', '**मण्डलार्चन**' आदि नामों से भी प्रसिद्ध है।

'**चक्र-पूजा**' का पूर्ण विधान '**श्रीबाला-नित्यार्चन**' जैसी '**पूजा-पद्धति**' की पुस्तकों से जाना जा सकता है। उसके अनुसार इष्ट-देवता की उपस्थिति में साधक परस्पर पूजन कर '**तर्पण-चर्वण**' करते हैं। '**चक्र-पूजा**' में इस अवसर पर जिन स्तोत्रों का पाठ साधकों को करना होता है, उन्हें ही पहले-पहल **चक्र-पूजा के स्तोत्र** नामक पुस्तक के रूप में '**कौल-कल्पतरु**' **पण्डित देवीदत्त शुक्ल** द्वारा व्यवस्थित ढङ्ग से संग्रहीत किया गया था।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि '**चक्र-पूजा**' के स्तोत्रों के अनेक '**पाठ**'-क्रम देखने को मिलते हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न '**गुरु**'-परम्पराओं के अन्तर्गत इसका प्रचलन विविध प्रकार से था। '**देवी-रहस्य**', '**कुलार्णव तन्त्र**', '**कौलावली निर्णय**' आदि ग्रन्थों में इसकी चर्चा भिन्न-भिन्न प्रकार से हुई है। **शुक्ल जी** को '**वैदिक पात्र-वन्दना**' की पाण्डुलिपि भी प्राप्त हुई थी, जिससे इसकी प्राचीनता भली-भाँति स्पष्ट होती है। यह प्राचीन '**वैदिक पात्र-वन्दना**' प्रस्तुत संस्करण के आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित है। पाठक बन्धु उसका अवलोकन कर सकते हैं और यह हृदयङ्गम कर सकते हैं कि तब उसका स्वरूप कैसा था?

संक्षेप में, विभिन्न पाण्डुलिपियों के आधार पर शुक्ल जी ने '**चक्र-पूजा**' के स्तोत्रों को व्यवस्थित-से-व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने का जो महान् कार्य किया था, उसका सभी साधकों ने हृदय से स्वागत किया और **चक्र-पूजा के स्तोत्र** के क्रमशः पाँच संस्करण प्रकाशित हुए।

पाँचवाँ संस्करण समाप्त होने पर '**चण्डी**'-शोध-पूर्ण आध्यात्मिक पुस्तक-माला के द्वारा इसका **नया छठवाँ संस्करण** प्रकाशित हो रहा है। आशा है कि प्रस्तुत नए संस्करण से अत्यन्त प्राचीन एवं विलक्षण '**चक्र-पूजा**' (**पात्र-वन्दना**) को अधिक-से-अधिक बन्धु न केवल जानेंगे अपितु उससे लाभ भी उठाएँगे।

—**ऋतशील शर्मा**

श्रीचण्डी-धाम
अक्षय तृतीया, २०७१ वि. (०१ मई, २०१४)

‘पात्र-वन्दना’ कैसे करें?

‘चक्र-पूजा’ (पात्र-वन्दना) ‘तन्त्र’-साधना का सर्व-श्रेष्ठ अर्चन है। तन्त्रों में इस अर्चन की जो पद्धति दी गई है तथा इसके सम्बन्ध में जो नियमादि निर्दिष्ट किए गए हैं, उन सब पर ध्यान-पूर्वक विचार करने से यह अपने आप ही प्रगट हो जाता है कि **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** वास्तव में एक **अत्यन्त सार-गर्भित दिव्य अर्चन** है।

उक्त **दिव्य अर्चन** पहले अपने देश में विविध स्थानों पर वास्तविक रूप में यथा-विधान होता था, परन्तु आज यह अपने मूल रूप में बहुत कम देखने को मिलता है। इसका मुख्य कारण यही है कि **‘गुरु-परम्परा, ‘कुल-परम्परा’** का अस्तित्व आज नाम-मात्र ही है। **‘गुरु’-परम्परा, ‘कुल’-परम्परा** के क्रमशः विलुप्त होने के कारण ही अत्यन्त प्राचीन **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** विधि-पूर्वक नहीं हो रही है।

ऐसी स्थिति में, एक बड़ी संख्या में आज जिज्ञासु बन्धुओं के मन में यह प्रश्न उठना भी स्वाभाविक है कि विधि-पूर्वक **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** को कैसे करें? दूसरे शब्दों में, **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** को अपने देश में सिखाने हेतु एक सुदृढ़ व्यवस्था होने की बहुत बड़ी आवश्यकता है।

अस्तु! जब तक देश में **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** के **‘ज्ञान’** व **‘क्रिया’**—दोनों पक्षों को विधिवत् बताने की समुचित व्यवस्था नहीं होती, तब तक जिज्ञासु बन्धु इसे **‘संक्षिप्त रूप’** में अपना कर लाभ उठा सकते हैं। अथवा, इसके विभिन्न **‘स्तोत्रों’** का **‘पाठ’**-मात्र कर लाभ उठा सकते हैं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि **श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग** में **श्रीकुलभूषणानन्दनाथ** जी के आचार्यत्व में इधर **‘संक्षिप्त चक्रार्चन’** की प्रामाणिक विधि हेतु, **‘गुरु-मण्डल’** की कृपा से कुछ विशेष उपलब्धियाँ हुई हैं। इन उपलब्धियों के फल-स्वरूप **‘मूल चक्रार्चन’** के नाम से एक पद्धति तैयार हुई है, जो अलग से प्रकाशित भी हो चुकी है। इस **‘मूल-चक्रार्चन’** के अनुसार प्रारम्भिक स्थिति में **‘पाँच पात्र-वन्दना’** करके इस **दिव्य अर्चन** को न केवल सीखा जा सकता है अपितु उसकी दिव्य अनुभूतियों को भी उपलब्ध किया जा सकता है।

अन्त में, **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** को कैसे करें—इसे स्पष्ट करने के उद्देश्य से हम यहाँ कुछ बातों का उल्लेख करना आवश्यक समझते हैं। आशा है कि इससे भी **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** की विधि को समझने में विशेष सुविधा होगी। यथा—

- **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** एक प्रकार का **सामूहिक अर्चन** है। **माँ भगवती** के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखनेवाले इसमें सामूहिक रूप से बैठकर **अर्चन (तर्पण-चर्वण)** करते हैं।
- **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** में ज्येष्ठता के अनुसार क्रम से बैठना चाहिए।
- **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** में **गुरु, आचार्य अथवा ज्येष्ठ साधक** की प्रधानता होती है। **तत्त्वों** के **शोधन** के समय मुख्य रूप वे लोग ही **‘पात्र-वन्दना’** पढ़ते हैं, दूसरे लोग ध्यान-पूर्वक **‘वन्दना’** का अनुसरण मात्र करते हैं।
- **चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना)** की सारी व्यवस्था में **गुरु, आचार्य अथवा ज्येष्ठ साधक** के आदेश का पालन होता है। कोई त्रुटि या कमी होने पर भी किसी को कुछ कहने का अधिकार नहीं होता। दूसरे शब्दों

में गुरु, आचार्य या ज्येष्ठ साधक ही मुखरित होते हैं। अन्य लोगों को ध्यान-पूर्वक मौन भाव से तत्त्वों का शोधन करना चाहिए।

- चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना) में गुरु या आचार्य के निर्देश पर कोई साधक 'स्तवन' कर सकता है। जब कोई साधक 'स्तवन' करता है, तब किसी अन्य को बीच में बोलने का अधिकार नहीं होता।
- चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना) में 'स्तुति-पाठ' मन्द स्वर में, मधुर स्वर में भावना-पूर्वक ही होना चाहिए और सबको 'स्तवन' करने का अवसर मिलना चाहिए। जब सामूहिक रूप से 'स्तवन' हो, तो सभी को 'एक स्वर' से 'मन्द स्वर' में पाठ करना चाहिए।
- चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना) में सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि यह एक 'अर्चन' है, जिसमें भगवती विराजमान हैं और सब पर भगवान् शङ्कर की कृपा की वर्षा हो रही है। इसे किसी प्रकार की पञ्चायत या प्रपञ्च की गोष्ठी नहीं समझना चाहिए। अर्चन के अतिरिक्त अन्य सामान्य पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक चर्चा नहीं होनी चाहिए।
- चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना) पढ़ने के बाद परस्पर ज्येष्ठ क्रमानुसार एक-दूसरे से आज्ञा ग्रहण कर 'जुहोमि'-'मैं स्वीकार करता हूँ' ऐसी भावना कर 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करना चाहिए। 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद गुरु/आचार्य को 'जुषस्व'-'होम करो' ऐसा कहना चाहिए।
- 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'चर्वण' करना चाहिए। 'चर्वण'-रहित पान को विष-वर्धक कहा गया है। अतः 'चर्वण'-सहित पान करना चाहिए।
- 'पात्र' को भूमि पर रखना निषिद्ध है। किसी 'आधार' पर अथवा 'पुष्प' आदि पर 'पात्र' को रखना चाहिए।
- अपने 'पात्र' के द्रव्य को अन्य किसी को नहीं देना चाहिए, न ही किसी के 'पात्र' के द्रव्य को लेना चाहिए। केवल 'शक्ति' के उच्छिष्ट द्रव्य को पीना चाहिए। 'वीरों' के उच्छिष्ट चर्वण को ज्येष्ठता के अनुसार ग्रहण कर सकते हैं।
- पूर्ण-पात्र लेने के बाद 'पात्र-प्रक्षालन-जल' से भूमि में बाँएँ हाथ की कनिष्ठा अथवा अनामिका से माया-बीज 'ह्रीं' लिखना चाहिए और उसका विन्दु ललाट पर लगाना चाहिए।

उक्त कुछ नियम यहाँ बताए गए हैं। अन्य नियमों को जिज्ञासु बन्धु प्रामाणिक पुस्तकों से जान सकते हैं। इन नियमों का अनुसरण करके चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना) को दिव्य रूप में किया जा सकता है। अब रही बात 'पञ्च'-मकारों की, तो जो लोग इनका उपयोग नहीं कर सकते, वे इनके स्थान पर 'अनुकल्पों' का प्रयोग कर सकते हैं। 'शक्ति-पूजा' में किसी वस्तु से घृणा नहीं करनी चाहिए-यही मुख्य बात होती है। किसी वस्तु का 'प्रयोग' किन्हीं कारणों से नहीं कर सकते, तो कोई बात नहीं। उसके स्थान पर 'विकल्पों' का प्रयोग करना चाहिए। संक्षेप में, सबसे मुख्य बात यही है कि साधना का भाव होना चाहिए, गुरु-जनों एवं माँ भगवती के प्रति श्रद्धा-भक्ति होनी चाहिए।

चक्र-पूजा (पात्र-वन्दना) को 'मानसिक' रूप से भी कर सकते हैं, जिसमें किसी बाहरी वस्तु का प्रयोग नहीं होता। मन से 'पाठ'-मात्र होता है।

पात्र-वन्दना

प्रथम पात्र-वन्दना

ॐ श्रीनाथादि-गुरु-त्रयं गण-पतिं पीठ-त्रयं भैरवम्।
सिद्धौघं वटुक - त्रयं पद - युगं दूती - क्रमं मण्डलम्।।
वीरानष्ट-चतुष्क-षष्टि-नवकं वीरावली-पञ्चकम्।
श्रीमन्मालिनि-मन्त्र-राज-सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।।
श्रीमद्-भैरव-शेखरे प्रविलसच्चन्द्रामृताप्लावितम्।
क्षेत्राधीश्वर-योगिनी-गण-महा-सिद्धैः समाराधितम्।।
आनन्दार्णवकं महात्मकमिदं साक्षात् त्रिखण्डामृतम्।
वन्दे श्रीप्रथमं कराम्बुज-गतं पात्रं विशुद्धि-प्रदम्।।
ॐ आत्म-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।

श्यामे श्याम-रते शवासन-गते मुण्डाब्ज-मालावृते!
सश्वन्मुक्त-कचे करावृत्त-कटि-प्रान्ते विमुक्ताम्बरे।।
खड्गश्छिन्न-शिरो वराभय-करे शवावतंसे मुदा।
पात्रं त्वं प्रथमं गृहाण सुधया पूर्णं दया-धीयताम्।।
क्रां कालिकायै पात्रं समर्पयामि नमः।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता - मये वह्नौ, जुहोमि शिव - रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु - पाश - समुच्छेद - कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा - रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

प्रथम पात्र-वन्दना के द्वारा 'गुरु-मण्डल' एवं 'आद्या भगवती काली' की वन्दना की जाती है और 'आत्म'-तत्त्व का शोधन किया जाता है।

❖❖❖

गुरु-मण्डल की वन्दना हेतु 'सहस्रार'-चक्र एवं 'आज्ञा'-चक्र का ध्यान किया जाता है।

❖❖❖

'पात्र'-वन्दना को पढ़ते समय अपने बाँएँ हाथ में 'त्रिखण्डा'-मुद्रा में 'पात्र' को रखा जाता है और दाएँ हाथ की हथेली से उसे ढके रहते हैं।

'पात्र-वन्दना' पढ़ने के बाद भावना द्वारा अपनी 'कुण्डलनी' के मुख में 'पात्र' के द्रव्य को 'हवन' करने की भावना के साथ पिया जाता है।

❖❖❖

'प्रथमे तु गुरोर्ध्यानं, ततः गुरु-स्तोत्रं' के अनुसार पहले 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर 'गुरु' का ध्यान करना चाहिए और फिर 'गुरु' के स्तोत्रों का पाठ करना चाहिए।

कारणं परमं द्विव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।१

* प्रथमे तु गुरोर्ध्यानं, ततः गुरु-स्तोत्रं--

'श्री-कुल' हेतु श्री गुरु-देव का ध्यान

ॐ श्वेतं श्वेत-विलेप-माल्य-वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रिययाचोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-घूर्णित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।

'काली-कुल' हेतु श्रीगुरु-देव का ध्यान

(१) ॐ आनन्दमानन्द-करं प्रसन्नं, ज्ञान-स्वरूपं निज-बोध-युक्तम्।
योगीन्द्रमीड्यं भव-रोग-वैद्यं, श्रीमद्-गुरुं नित्यमहं भजामि।।
(२) ॐ शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशं, शुद्ध-क्षौम-विराजितम्।
गन्धानुलेपनं शान्तं, वराभय-कराम्बुजम्।।
वामोरु-शक्ति-संयुक्तं, सर्वाभरण-भूषितम्।
मन्द-स्मितं गुरुं ध्याये, कारुण्येनावलोकितम्।।

गुरु-अष्टक

ॐ ब्रह्म-स्थान-सरोज-मध्य-विलसच्छीतांशु-पीठ-स्थितम्।
स्फूर्यत्-सूर्य-रुचिं वराभय-करं कर्पूर-कुन्दोज्ज्वलम्।।
श्वेत-स्रग्-वसनानुलेपन-युतं विद्युद्-रुचा कान्तया।
संश्लिष्टार्ध-तनुं प्रसन्न-वदनं वन्दे गुरुं सादरम्।।१
मोह-ध्वान्त-महान्ध-विग्रह-वतां चक्षूंषि चोन्मीलयन्।
यश्चक्रे रुचिराणि तानि दयया ज्ञानाञ्जनाभ्यञ्जनैः।।
व्याप्तं • यन्महसा जगत्-त्रयमिदं तत्त्व-प्रबोधोदयम्।
तं वन्दे शिव-रूपिणं निज-गुरुं सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदम्।।२
मातङ्गी भुवनेश्वरी च वगला धूमावती भैरवी।
तारा छिन्न-शिरो-धरा भगवती श्यामा रमा सुन्दरी।।

दातुं न प्रभवन्ति वाञ्छित-फलं यस्य प्रसादं विना।
तं वन्दे शिव-रूपिणं निज-गुरुं सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदम्।।३
काशी द्वारवती प्रयाग-मथुराऽयोध्या गयाऽवन्तिका।
माया-पुष्कर-काञ्चिकोत्कल-गिरिः श्रीशैल-विन्ध्यादयः।।
नैते तारयितुं भवन्ति कुशलाः यस्य प्रसादं विना।
तं वन्दे शिव-रूपिणं निज-गुरुं सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदम्।।४
रेवा सिन्धु सरस्वती त्रि - पथगा सूर्यात्मजा कौशिकी।
गङ्गा-सागर-सङ्गमाद्रि-तनया लौहित्य-शोणादयः।।
नैते तारयितुं भवन्ति कुशलाः यस्य प्रसादं विना।
तं वन्दे शिव-रूपिणं निज-गुरुं सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदम्।।५
सत्कीर्तिर्विमलं यशः सु-कविता पाण्डित्यमारोग्यता।
वादे वाक्-पटुता कुले चतुरता गाम्भीर्यमक्षोभिता।।
प्रागल्भ्यं प्रभुता गुणे निपुणता यस्य प्रसादाद् भवेत् ।
तं वन्दे शिव-रूपिणं निज-गुरुं सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदम्।।६
ध्यानं दैवत-पूजनं गुरु-तपो दानाग्नि-होत्रादयः।
पाठो होम-निषेवनं पितृ-मखाद्यभ्यागतार्चावलिः।।
एते व्यर्थ-फला भवन्ति नियतं यस्य प्रसादं विना।
तं वन्दे शिव-रूपिणं निज - गुरुं सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदम्।।७
लोकेशो हरिरम्बिका स्मर-हरो माता - पिताऽभ्यागताः।
आचार्याः कुल-पूजिता यति - वरा वृद्धास्तथा भिक्षुकाः।।
नैते तारयितुं भवन्ति कुशला यस्य प्रसादं विना।
तं वन्दे शिव-रूपिणं निज-गुरुं सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदम् ॐ।। ८

फल-श्रुति

पूर्वाशाऽभिमुखीः कृताञ्जलि-पुटः श्लोकाष्टकं यः पठेत्।
पौरश्चर्य-विधिं विनाऽपि लभते मन्त्रस्य सिद्धिं पराम्।।
नो विघ्नः परि-भूयते प्रति-दिनं प्राप्नोति पूजा-फलम्।
देहान्ते परमं पदं हि विशते यद् योगिनां दुर्लभम्।।९

।। श्रीवामकेश्वर-तन्त्रे उमा-महेश्वर-संवादे गुर्वष्टकम् ।।

दश महा-विद्याएँ दो कुलों में विभाजित हैं–
१. काली-कुल और
२. श्री-कुल।

❖❖❖

'काली-कुल' में–
१. काली, २. तारा,
३. भुवनेश्वरी और
४. छिन्नमस्ता महा-विद्याएँ हैं।

❖❖❖

'श्री-कुल' में–
१. षोडशी, २. भैरवी,
३. बगला, ४. धूमावती,
५. मातङ्गी और ६.कमला महा-विद्याएँ हैं।

❖❖❖

जो जिस कुल की महा-विद्या की उपासना करता है, उसे उसी कुल के नियमों का पालन करना चाहिए।

❖❖❖

'काली-कुल' और 'श्री-कुल' के गुरुओं के ध्यान अलग-अलग हैं। अपने कुल के अनुसार गुरु का ध्यान करना चाहिए।

गुरु-स्तुति

ॐ अज्ञान-तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन-शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।१
अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२
विश्वात्मकः परः शम्भुर्विश्वोत्तीर्णोऽस्म्यहं दृढम्।
इति यस्याज्ञया तस्मात्, तस्य श्रीपादुका-स्मृतिः।।३
सहस्रारे पद्मे विगत-शशठस्रान्तर-गतम्।
सदा देवैर्वन्द्यं भव-भय-विनाशैक-करणम्।।
वराभी पाणिभ्यां प्रकटित-समन्द-स्मित-मुखम्।
नमामीदृग्-रूपं परम-गुरु-रूपं स-करुणम्।।४
शान्तं शुक्ल-कलेवरं, त्रि-नयनं कान्ताङ्ग-भूषं शिवम्।
वाञ्छाऽभीति-करं प्रचण्ड-तिमिराज्ञान-प्रकाशं रविम्।।
नित्यं नौमि रविं तथाब्धि-तरणे तं कर्ण-धारं गुरुम्।
यस्य श्रीपद-पङ्कजोद्भव-सुधा सिद्धैः सदा पीयते।।५
सदा विधोर्मण्डल-मध्य-संस्थम्,
नमामि नित्यं गुरु-पाद-पद्मम्।
प्रसादतो यस्य मया प्रलब्धम्,
स - वासनाऽज्ञान - विनाश - वीजम्।।६
पद्मोद्भवे सम-कला-पतयोऽपि नित्यम्,
यस्यांघ्रि-पद्ममलं परि-भावयन्ति।
कारुण्य-वारिधिरशेष-गुणैक-राशिः,
सोऽयं गुरुः शिरसि शुक्ल-सरोज-मध्ये।।७
प्रबद्धानां पाशैः सकल-गुण-माया मयै-
र्निमग्नानां नित्यं भव-जल-निधेरन्तर-गतः।
कृपा-लेशो बन्धं परि-हरित यस्यांघ्रि-तरगः,
प्रवन्दे सानन्दं तमपि गुरु-रूपं सकरुणम्।।८
कवित्वं पाण्डित्यं त्रिभुवन-पतित्वं न हि कदा,

जिन बन्धुओं को अभी तक किन्हीं सद्-गुरु की कृपा प्राप्त न हुई हो, वे चाहें तो 'गुरु' के रूप में गुप्तावतार बाबाश्री, राष्ट्र-गुरु स्वामीजी, 'कौल-कल्पतरु' शुक्ल जी एवं परम पूज्या माई जी जैसे गुरुजनों का ध्यान कर सकते हैं।

न वा स्वर्गं सिद्धिं न सुर-वर-साम्यं च नियतम्।
न वाञ्छामो मोक्षं पुर-हर-पदं नैव शिवताम्,
यदि स्याच्चेतो मे निरवधि गुरोः पाद-कमलम् ॐ।।९
।। कौलावली-निर्णये प्रथमोल्लासे गुरु-स्तुतिः ।।

गुरु-स्तोत्र

ॐ ज्ञानात्मानं परमात्मानं, दानं ध्यानं योगं ज्ञानम्।
जानन्नपि तत् सुन्दरि! मातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।१
प्राणं देहं गेहं राज्यं, भोगं मोक्षं भक्तिं पुत्रम्।
मन्ये मित्रं वित्त-कलत्रं, न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।२
वानप्रस्थं यति-विध-धर्मं, पारमहंस्यं भिक्षुक-चरितम्।
साधोः सेवा बहु-सुर-भक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।३
विष्णोर्भक्तिः पूजन-चरितं, वैष्णव-सेवा मातरि भक्तिः।
विष्णोरिव पितृ-सेवन-योगो, न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।४
प्रत्याहारं चेन्द्रिय-जयता, प्राणायामं न्यास-विधानम्।
इष्टैः पूजा जप-तप-भक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।५
काली दुर्गा कमला भुवना, त्रिपुरा भीमा बगला पूर्णा।
श्रीमातङ्गी धूमा तारा एता विद्या त्रिभुवन-सारा न गुरोरधिकं।६
मात्स्यं कौर्मं श्रीवाराहं, नर-हरि-रूपं वामन-चरितम्।
अवतारादिकमन्यत् सर्वं, न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।७
श्रीरघु-नाथं श्रीयदु-नाथं, श्रीभृगु-देवं बौद्धं कल्किम्।
अवतारानिति दशकं मन्ये, न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।८
गङ्गा काशी काञ्ची द्वारा, मायाऽयोध्याऽवन्ती मथुरा।
यमुना रेवा पर-तर-तीर्थं, न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।।९
गोकुल-गमनं गोपुर-रमणं, श्रीवृन्दावन-मधुपुर-मटनम्।
एतत् सर्वं सुन्दरि! मातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।१०
तुलसी-सेवा हरि-हर-भक्तिर्गङ्गा-सागर-सङ्गम-मुक्तिः।
किमपरमधिकं कृष्णे! भक्तिः एतत् सर्वं सुन्दरि!
मातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॐ।।११

गुप्तावतार बाबाश्री

राष्ट्र-गुरु स्वामी जी

'कौल-कल्पतरु' शुक्ल जी

परम पूज्या माई जी

पहले 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने एवं गुरु का ध्यान आदि करने के बाद चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए।

❖❖❖

साधकों के लिए–
१. अहं ब्रह्मास्मि,
२. सोऽहं, ३. हंसः,
४. अहं ब्रह्मास्मि...।

साधिकाओं के लिए–
१. अहं प्रकृतिः,
२. साऽहं, ३. हंसा,
४. अहं प्रकृतिः...।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं
शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं,
शत्रु-मर्दनं।

❖❖❖

काम-क्रोध-लोभ-मोह
अष्ट-पाशाः शमनं यान्तु,
शमनं यान्तु...।

॥ फल-श्रुति ॥

एतत् स्तोत्रं पठति च नित्यं, मोक्ष-ज्ञानी सोऽप्यति-धन्यः।
ब्रह्माण्डान्तर्यद्-यद् ज्ञेयं सर्वं, न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥१२

गुरु-पादुका स्तुति

ॐ नमस्ते भगवन्नाथ! शिवाय गुरु-रूपिणे।
विद्यावतार-संसिद्ध्यै, स्वीकृतानेक-विग्रह ॥१
नवाय नव-रूपाय, परमात्मैक-रूपिणे ।
सर्वाज्ञान-तमो - भेद - भानवे चिद् - घनाय ते ॥२
स्वतन्त्राय दया-क्लृप्त-विग्रहाय शिवात्मने।
पर-तन्त्राय भक्तानां, भव्यानां भव्य-रूपिणे॥३
विवेकिनां विवेकाय, विमर्शाय विमर्शिणाम्।
प्रकाशिनां प्रकाशाय, ज्ञानिनां ज्ञान - रूपिणे ॥४
पुरस्तात् पार्श्वयोः, पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः ।
सदा सच्चित्त-रूपेण, विधेहि भवदासनम्॥५
अज्ञान-तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन-शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥६
नमोऽस्तु गुरवे तुभ्यं, ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मने।
अविद्या - ग्रस्त - संसार - सागरोत्तार - हेतवे ॥७
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परं ज्ञानं, गुरुरेव परं तपः॥८
अतः सर्वत्र देवेशि!, गुरु-पूजा गरीयसी।
अन्य-देव-सपर्या वा, चान्य-देवस्य कीर्तनम्॥९
गुरु-देवं विना देवि!, तदग्रे क्रियते यदि।
तदा नरकमाप्नोति, सत्यमेतद् वदाम्यहम्॥१०
पूजिते गुरु-पादे वै, सर्वदैव सुखी भवेत् ।
सर्वेषां मन्त्र-तन्त्राणां, पिताऽसौ यः सदा-शिवः॥११
यस्य भक्तिर्गुरौ नित्यं, वर्तते देव-वत् प्रिये!।
तस्य सर्वार्थ-सिद्धिः स्यान्नान्यथा खलु पार्वति! ॐ॥१२

॥ गन्धर्व-तन्त्रे षष्ठ-पटले गुरु-पादुका-स्तुतिः॥

***

द्वितीय पात्र-वन्दना

हैमं सिन्धु-रसावहं दयितया दत्तं च पेयादिभिः।
किञ्चच्चञ्चल-रक्त-पङ्कज-दृशा सानन्दमुद्वीक्षितम्।।
वामे स्वादु विशुद्ध-शुद्धि-सकलं पाणौ विधायात्मके।
वन्दे पात्रमहं द्वितीयमधुनानन्दैक-संवर्द्धनम्।।
ॐ विद्या-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।

तारे तार-कुचे शवासन-गते रक्त-त्रिनेत्रान्विते!
पिङ्गोग्रैक जटे विकाशि-वदने शार्दूल-चर्मावृते!।।
खर्वे कर्तरिकाऽसि-मुण्ड-नलिने राजत्-करे नीलभे!
मातः! पात्रमिदं गृहाण सुधया पूर्णं द्वितीयं मुदा।।
तां तारायै पात्रं समर्पयामि नमः।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।२

* द्वितीये पात्रे तु इष्ट-चिन्तनम्–

१. श्री काली का ध्यान

ॐ शवारूढां महा - भीमां, घोर - दंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्ग-मुण्ड-वराभय-करां शिवाम्।।

द्वितीय पात्र-वन्दना के द्वारा 'द्वितीया भगवती तारा' की वन्दना की जाती है और 'विद्या'-तत्त्व का शोधन किया जाता है।

❖❖❖

'द्वितीये तु इष्ट-चिन्तनम्' के अनुसार दूसरे 'पात्र' को ग्रहण करने के बाद 'इष्ट'-देवता का ध्यान करना चाहिए। 'इष्ट'-देवता के ध्यान हेतु यहाँ दसों महा-विद्याओं के ध्यान दिए जा रहे हैं। जिसका जो 'इष्ट' हो, उसका वह 'ध्यान' करे। चाहें तो, दसों महा-विद्याओं के ध्यान करें।

मुण्ड-माला-धरां देवीं, ललज्जिह्वां दिगम्बराम्।
एवं सञ्चिन्तये कालीं, श्मशानालय-वासिनीम्।।

***

'इष्ट'-देवता का ध्यान हृदय-चक्र में करना चाहिए।

देवी श्रीकाली

देवी श्रीतारा

देवी श्री षोडशी

२. श्री तारा का ध्यान

ॐ प्रत्यालीढ - पदार्पितांघ्रि - शव-हृद्-घोराट्टहासा परा,
खड्गेन्दीवर - कर्त्रि - खर्पर - भुजा हूङ्कार-वीजोद्भवा।
खर्वा नील-विशाल - पिङ्गल - जटा-जूटैक-नागैर्युता,
जाड्यं न्यस्य कपाल-कर्त्रि-जगतां हन्त्युग्र-तारा स्वयम्।।

***

३. श्री षोडशी का ध्यान

(क) श्री बाला-त्रिपुर-सुन्दरी का ध्यान

ॐ अरुण - किरण - जालैरञ्जिता सावकाशा,
विधृत-जप-वटीका पुस्तकाभीति-हस्ता।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था,
निवसतु हृदि बाला नित्य-कल्याण-शीला।।

***

(ख) श्री ललिता-त्रिपुर-सुन्दरी का ध्यान

ॐ सिन्दूरारुण-विग्रहां त्रि-नयनां माणिक्य-मौलि-स्फुरत्-
तारा-नायक-शेखरां स्मित-मुखीमापीन-वक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलि-पूर्ण-रत्न-चषकं रक्तोत्पलं विभ्रतीम्,
सौम्यां रत्न-घटस्थ-रक्त-चरणां ध्याये परामम्बिकाम्।।

***

(ग) श्री षोडशी महा-त्रिपुर-सुन्दरी का ध्यान

ॐ बाल-व्यक्त-विभाकरामित-निभां भव्य-प्रदां भारती-
मीषत्-फुल्ल-मुखाम्बुज-स्मित-करैराशा-भवान्धापहाम्।
पाशं साभयमंकुशं च वरदं संविभ्रतीं भूतिदाम्,
भ्राजन्तीं चतुराम्बुजाकृति-करैर्भक्त्या भजे षोडशीम्।।

***

४. श्री भुवनेश्वरी का ध्यान

ॐ उद्यद्-दिन-द्युतिमिन्दु-किरीटां, तुङ्ग-कुचां नयन-त्रय-युक्ताम्।
स्मेर-मुखीं वरदांकुश-पाशाभीति-करां प्रभजे भुवनेशीम्।।

***

५. श्री छिन्न-मस्ता का ध्यान

ॐ प्रत्यालीढ-पदां सदैव दधतीं छिन्न-शिरः कर्त्रिकाम्,
दिग्-वस्त्रां स्व-कबन्ध-शोणित-सुधा-धारां पिबन्तीं मुदा।
नागाबद्ध-शिरोमणिं त्रि-नयनां हृद्युत्पलालंकृताम्,
रत्यासक्त-मनोभवोपरि-दृढां ध्याये छिन्न-मस्तकाम्।।

***

६. श्री भैरवी का ध्यान

ॐ उद्यद्-भानु-सहस्त्र-कान्तिमरुण-क्षौमां शिरो-मालिकाम्,
रक्तालिप्त-पयोधरां जप-वटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र-विलसद्-वक्त्रारविन्द-श्रियम्,
वन्दे बद्ध-हिमांशु-रत्न-मुकुटां मन्द-स्मितां भैरवीम्।।

***

७. श्री धूमावती का ध्यान

ॐ धूम्राभां धूम्र-वस्त्रां प्रकटित-दशनां मुक्त-बालाम्बराढ्याम्,
काकाङ्क-स्यन्दनस्थां धवल-कर-युगां शूर्प-हस्ताति-रूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्-क्षान्त-देहां मुहुरति-कुटिलां वारि-वाञ्छा-विचित्ताम्,
ध्याये धूमावतीं वाम-नयन-युगलां भीतिदां भीषणास्याम्।।

***

८. श्री बगलामुखी का ध्यान

ॐ सौवर्णासन-संस्थितां त्रि-नयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्,
हेमाभाङ्ग-रुचिं शशाङ्क-मुकुटां स्त्रक्-चम्पक-स्त्रग्-युताम्।
हस्तैर्मुद्गर - पाश - बद्ध - रसनां संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्ताङ्गीं बगला-मुखीं त्रि-जगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये।।

***

देवी श्री भुवनेश्वरी

९. श्री मातङ्गी का ध्यान

ॐ श्यामां शुभ्रां शुभालां त्रि-कमल-नयनां रत्न-सिंहासनस्थां,
भक्ताभीष्ट-प्रदात्रीं सुर-निकर-करासेव्य-कञ्जांघ्रि-युग्माम्।
पाशं खड्गं चतुर्भिर्वर-कमल-करैः खेटकं चांकुशं च,
मातङ्गीमावहन्तीमभिमत - फलदां मोदिनीं चिन्तयामि।।

***

१०. श्री कमला का ध्यान

ॐ आसीना सरसीरुहे स्मित-मुखी हस्ताम्बुजैर्बिभ्रती,
दानं पद्म-युगाभये च वपुषा सौदामिनी-सन्निभा।
मुक्ता - हार - विराजमान - पृथुलोत्तुङ्ग - स्तनोद्भासिनी,
पायाद् वः कमला कटाक्ष-विभवैरानन्दयन्ती हरिम्।।

***

दूसरे **'पात्र'** के द्रव्य को ग्रहण करने एवं **इष्ट-देवता का ध्यान** आदि करने के बाद चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए–

सा विद्या या विमुक्तये।
सा विद्या या विमुक्तये।
सा विद्या या विमुक्तये।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं
शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।

❖❖❖

काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः
शमनं यान्तु, शमनं यान्तु…।

तृतीय पात्र-वन्दना

सर्वाम्नाय-कला-कलाप-कलितं कौतूहल-द्योतकम्।
चन्द्रोपेन्द्र-महेन्द्र-शम्भु-वरुण-ब्रह्मादिभिः सेवितम्।।
ध्यातं देव-गणैः परं मुनि-गणैर्मोक्षार्थिभिः सर्वदा।
वन्दे पात्रमहं तृतीयमधुना स्वात्मावबोध-क्षमम्।।
ॐ शिव-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।

बाले बाल-दिनेश-कोटि-रुचिरे बालार्क-बिम्बाम्बरे!
पाशेष्वास-शरांकुशान्वित-करे बालेन्दु-राट्-शेखरे!।।
हाला-घूर्णित-लोचन-त्रय-युते नाना-विभूषान्विते!
पात्रं पूर्णमिदं गृहाण सुधया मातस्तृतीयं मुदा।।
श्रीं महा-विद्यायै पात्रं समर्पयामि नमः।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।३

*'तृतीये पात्रे न्यास-जालं'।

***

तृतीय पात्र-वन्दना के द्वारा 'तृतीया भगवती षोडशी' की वन्दना की जाती है और 'शिव'-तत्त्व का शोधन किया जाता है।

❖❖❖

'तृतीये न्यास-जालं' के अनुसार तीसरे 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर 'प्राणायाम' तथा अपने मन्त्र का कर-न्यास, षडङ्ग-न्यासादि करना चाहिए और चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए—

परोपकाराय सतां विभूतयः।
परोपकाराय सतां विभूतयः।
परोपकाराय सतां विभूतयः।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं
शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं,
शत्रु-मर्दनं।

❖❖❖

काम-क्रोध-लोभ-मोह
अष्ट-पाशाः शमनं यान्तु,
शमनं यान्तु…।

चतुर्थ पात्र-वन्दना

मद्यं मीन-रसावहं हरिहर-ब्रह्मादिभिः पूजितम्।
मुद्रा-मैथुन-धर्म-कर्म-निरतं क्षाराम्ल-तिक्ताश्रितम्।।
आचार्याष्टक-सिद्ध-भैरव-कला-न्यासेन-संशोधितम्।
पायात् पञ्च-मकार-तत्त्व-सहितं पात्रं चतुर्थं नमः।।
ॐ प्रकृति-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।

शोणे श्रीभुवनेश्वरि त्रिनयने बन्धूक-पुष्पाम्बरे!
पाशाभीति-वरांकुशान्वित-करे तारेश-भाल-स्थले!।।
काञ्ची-कुण्डल-कङ्कणाङ्गद-रणन्मञ्जीर-हारोज्ज्वले!
पीनोत्तुङ्ग-कुचे सहास-वदने! पात्रं चतुर्थं भजे।।
ह्रीं भुवनेश्वर्यै पात्रं समर्पयामि नमः।।

चतुर्थ पात्र-वन्दना के द्वारा 'भगवती भुवनेश्वरी' की वन्दना की जाती है और 'प्रकृति'-तत्त्व का शोधन किया जाता है।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी- मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।४

*'चतुर्थे पात्रे जपमाचरेत्'। तदनन्तरे 'कुलाङ्गना-स्तोत्रं' पठेत्-

कुलाङ्गना-स्तोत्र

मातर्देवि! नमस्तेऽस्तु, ब्रह्म-रूप-धरेऽनघे!
कृपया हर मे विघ्नं, मन्त्र-सिद्धिं प्रयच्छ मे।।१

माहेशि! वरदे देवि! परमानन्द-रूपिणि!
कृपया हर मे विघ्नं, मन्त्र-सिद्धिं प्रयच्छ मे।।२
कौमारि! सर्व-विद्येशे! कुमार-क्रीडने! परे!
कृपया हर मे विघ्नं, मन्त्र-सिद्धिं प्रयच्छ मे।।३
विष्णु-रूप-धरे देवि! विनता-सुत-वाहिनि!
कृपया हर मे विघ्नं, मन्त्र-सिद्धिं प्रयच्छ मे।।४
वाराहि! वरदे देवि! दंष्ट्रोद्धृत-वसुन्धरे!
कृपया हर मे विघ्नं, मन्त्र-सिद्धिं प्रयच्छ मे।।५
शक्र-रूप-धरे देवि! शक्रादि-सुर-पूजिते!
कृपया हर मे विघ्नं, मन्त्र-सिद्धिं प्रयच्छ मे।।६
चामुण्डे! मुण्ड-मालासृक् - चर्चिते! विघ्न-नाशिनि!
कृपया हर मे विघ्नं, मन्त्र-सिद्धिं प्रयच्छ मे।।७
महा-लक्ष्मि! महोत्साहे! क्षोभ-सन्ताप-नाशिनि!
कृपया हर मे विघ्नं, मन्त्र-सिद्धिं प्रयच्छ मे।।८
मिति-मातृ-मये देवि! मिति-मातृ-बहिष्कृते!
एके बहु-विधे देवि! विश्व-रूपे! नमोऽस्तु ते।।९
एतत् स्तोत्रं पठेद् यस्तु, कर्मारम्भेषु संयतः!
विदग्धां वा समालोक्य, तस्य विघ्नं न जायते।।१०

***

चौथे 'पात्र' के द्रव्य को पूर्ण रूप से ग्रहण करने एवं इष्ट-मन्त्र का जप तथा 'कुलाङ्गना-स्तोत्र' का पाठ करने के बाद चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए–

साधकों के लिए : **कामाख्या तु गृहे गृहे। कामाख्या तु गृहे गृहे। कामाख्या तु गृहे गृहे।**

साधिकाओं के लिए : **शिवस्तु गृहे गृहे। शिवस्तु गृहे गृहे। शिवस्तु गृहे गृहे।**

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं - शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।
काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः-शमनं यान्तु, शमनं यान्तु...।

'चौथी पात्र-वन्दना' के द्वारा 'प्रकृति'-तत्त्व का शोधन किया जाता है। अतः चौथे पात्र के द्रव्य में स्व-शक्ति-रूपा 'प्रकृति' के प्रसाद को मिलाकर पूर्ण-रूप से ग्रहण किया जाता है। अर्थात् 'पात्र' के द्रव्य को पूरा-का-पूरा ग्रहण किया जाता है।

❖❖❖

'चतुर्थे जपमाचरेत्' के अनुसार चौथे 'पात्र' के द्रव्य को 'प्रसाद'-सहित ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर कम-से-कम तीन बार इष्ट-मन्त्र का जप करना चाहिए।

❖❖❖

'जप' के बाद 'शक्ति-स्तोत्र' (कुलाङ्गना-स्तोत्र) का पाठ करना चाहिए।

पञ्चम पात्र-वन्दना

आधारे भुजगाधिराज-वलये पात्रं मही-मण्डलम्।
मद्यं सप्त-समुद्र-वारि-पिशितं चाष्टौ च दिग्दन्तिनः।।
सोऽहं भैरवमर्चयाम्यनु-दिनं तारा-गणैरक्षतै-
रादित्य-प्रमुखैः सुरासुर-गणैराज्ञा-करैः किङ्करैः।।
ॐ पुरुष-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।

मातर्भैरवि शोणभे शशि-धरे स्मेरानने तीक्ष्णे!
रक्तालिप्त-कुचेति शोण-वसने मुण्डाब्ज-माला-धरे!।।
विद्याऽभीति-वरांस्तथा जप-वटीं हस्तैर्दधाने शिवे!
पात्रं वारिजगे गृहाण सुधया पूर्णं मुदा पञ्चमम्।।
भैं भैरव्यै पात्रं समर्पयामि नमः।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।५

*'पञ्चमे पात्रे शक्ति-पूजन-सहितं 'चक्राष्टक-स्तोत्रं' पठेत्–

पञ्चम पात्र-वन्दना के द्वारा 'भगवती भैरवी' की वन्दना की जाती है और 'पुरुष'-तत्त्व का शोधन किया जाता है।

चक्राष्टक-स्तोत्रम्

भूदेवा यत्र देवा सुललित-वदना दिव्य-कन्यायमाना।
सामोदा गीत-गाना विदधति, विविधं विप्र-वत् सर्व-वर्णाः।।१
द्वारे सायुज्य-मुक्तेर्हरि-हर-विधिभिः सर्वदा सेव्यमानम्।
श्रीचक्रं सम्प्रवर्त्यं जगति, विजयते दैवतं देवतानाम्।।२
यामे यामे निशायां सकल-पशु-जनो घोर-निद्रामवाप्तः।
सिद्धान्ते शुद्ध-भूमौ मधुर-मधु-भरा चन्दनानेक-पुष्पैः।।३
सामोदे जायमाने सपदि, परिणतं शाम्भवैर्योगिनीभ्यः।
श्रीचक्रं सम्प्रवर्त्यं जगति, विजयते सिद्धिदः साधकानाम्।।४
मार्गाणां चन्द्र-चूडः स भवतु, तपसा दुर्लभं देवतानाम्।
स्वच्छन्दं विश्व-मातः! तव पद-कृपया शम्भु-मार्गे चरामः।।५
तस्मादागत्य चक्रे गुरु-पद-कमले विद्विषां काल-रात्रिः।
भूत्वा भूत-प्रबुद्धा प्रभव-भव-हरे देवि! नः पाहि पाहि।।६
आधारे चक्र-वह्नौ परम-दश-कला द्वादशार्कस्य पात्रे।
पीयूषे षोडशेन्दुरभि-रमणि, कला-देवतां पूजयामि।।७
यज्ञे जातेन शक्तिं शिरसि, शिरसि ये शम्भुना सामरस्यम्।
नेत्रे द्वाराति-वर्जं विगलितममृतं योजयामः कलानाम्।।८
बालां बालार्क-वर्णां कुच-भर-नमितां कुंकुमारक्त-वस्त्राम्।
दिव्यालङ्कार-युक्तां चकित-मृग-दृशामंकुशं पञ्च-वाणान्।।९
पाशं चापं दधानामरुण-कर-तलैः सेव्यमानाऽङ्ग-यष्टिम्।
चं चन्द्रार्द्ध-चूडां हिम-कर-वदनां, सुन्दरीं तां नमामि।।१०
दिव्यं द्रव्येन पूर्णां कर-कमल-तले रत्न-पात्रं स्व-वामे।
दक्षे शुद्धिं दधानां हिम-कर-वदनां वर्ण-विश्रान्त-नेत्राम् ।।११
सौन्दर्या देवताया स्तवनमपि, सदा नाद-रूपं स्फुरन्तम्।
श्रीचक्रं सम्प्रवर्त्यं जगति, विजयते मङ्गलं मङ्गलानाम्।।१२
मन्दं मन्दं पिबन्तो मधुर-मधु-रसं कामिनी-वक्त्र-पूतम्।
शुद्धार्थं शुद्धि-खण्डं स्मर-हर-दहनं चान्तरे होमयन्तः।।१३

पाँचवें पात्र के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर साधक को मन-ही-मन अपनी 'शक्ति' का तथा साधिका को अपने 'शिव' का पूजन करते हुए 'चक्राष्टक'-स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

अन्योऽन्यं भोजयन्तो गत-मल-मनसा सुन्दरीं भावयन्तः।
सर्वे क्रीडन्ति शैवा, सुललित-वदनालिङ्गनालिङ्गिताङ्गाः।।१४
दोषादोषे न विघ्नः, तव पद-कृपया कण्ठ-पूर्णं पिबामः।
स्वच्छन्दं दिव्य-रूपं, सुललित-वदनाऽऽस्वादनेनावशिष्टम्।।१५
शुद्धे शुद्धिं नराणां सपदि, विदधतामन्तराग्नौ जुहोमि।
श्रीचक्रं सम्प्रवर्त्य लसदमर-वधू-वृन्दमानन्दयामः।।१६

***

'चक्राष्टक-स्तोत्र' का पाठ करते हुए 'पुरुष-तत्त्व' के परिशोधन की भावना करनी चाहिए–

पुरुष-तत्त्वं परिशोधयामि।
शिवोऽहं।
शक्ति-रूपोऽहं।
सर्वोऽहं।
सर्वदाऽस्म्यहम्।

पाँचवें 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने एवं चक्राष्टक-स्तोत्र का पाठ करने के बाद चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए–

शिवोऽहं शक्ति-रूपोऽहं, सर्वोऽहं सर्वदाऽस्म्यहम्।
मूर्ध्नि श्रीगुरु-चिन्तनं, जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा ।।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं
शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।

❖❖❖

काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः
शमनं यान्तु, शमनं यान्तु…।

षष्ठ पात्र-वन्दना

छत्रं चामर - भद्र - पीठ - परमानन्दोदयं दायकम्।
रम्यं राज्यं-करं सदा सुख-करं साम्राज्य-सायुज्यदम्।।
नाना-व्याधि-भवान्धकार-हरणं जन्मान्तर-ध्वंसनम्।
श्रीमद्-भैरव-भैरवी-प्रियतमं पात्रं च षष्ठं नमः।।
ॐ मनस्तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।

देवि छिन्न-गले! पतत-स्व-रुधिरं पातुं विवृत्ताननम्।
भालं मुक्त-कचं निजं निज-करे वामे दधाने मुदा।।
भानुस्थ-स्मरगे समीक्ष्य च निजे सख्यौ च मोदान्विते!
पात्रं स्वीकुरु षष्ठमेतदमलं मातः! सुधा-पूरितम्।।
छिं छिन्नमस्तायै पात्रं समर्पयामि नमः।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।६

*'षष्ठे पात्रे 'आनन्द-स्तोत्रं' पठेत्-

छठवें पात्र-वन्दना के द्वारा 'भगवती छिन्नमस्ता' की वन्दना की जाती है और 'मनस्तत्त्व' का शोधन किया जाता है।

छठवें पात्र के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद '**पात्र**' को यथा-स्थान रखकर अपने '**मन**' को आनन्दित करने हेतु '**आनन्द-स्तोत्र**' का पाठ करना चाहिए।

आनन्द-स्तोत्रम्

ॐ नमाम्यहं मङ्गल-योग-मुद्रां, सौन्दर्य-लक्ष्मीं भुवि वैजयन्तीम्।
श्रीसुन्दरीमिन्दु-कलावतंसां, सानन्दमानन्द-मयीं स्मरामि।।१
श्रीसुन्दरी-पूजन-तत्पराणां, हालाभिराघूर्णित-लोचनानाम्।
अस्माकमानन्दित-मानसानां, माहेश्वराणां दिवसाः प्रयान्तु।।२
निधाय धारां वदने सुधानां, श्रीचक्रमभ्यर्च्य कुल-क्रमेण।
आस्वाद्य मद्यं पिशितं मृगाक्षीमालिंग्य मोक्षं सुधियः प्रयान्ति।।३
दिने दिने तीर्थ-घटोऽस्तु पूर्णो, दिने दिने तर्पणमस्तु देव्याः।
दिने दिने सङ्कटतां द्वितीयं, दिने दिने साधक-सङ्गमोऽस्तु।।४
आस्वादयन्तः पिशितस्य खण्डमाकण्ठ-पूर्णं मदिरां पिवामः।
वामेक्षणा-सङ्गममादधाना, भुक्तिं च मुक्तिं च वयं व्रजामः।।५
न स्वादु-लाभः पिशितस्य यस्मिन्, प्रवर्तते हेतु-कथा न यस्मिन्।
न यत्र सङ्गो मृग-लोचनायास्तद्-तद्-दिनं दुर्दिनमेव मन्ये।।६
अनन्तरं काल-वशाच्च योऽहं, सोऽहं भविष्यामि न मे विषादः।
श्रीसुन्दरीं तां सततं स्मरामि, दिनं तु तद्-भैरव सोऽहमेव।।७
उन्मूलनं पातक-भूरुहाणां, उन्मीलनं चित्त-कुतूहलानाम्।
आकर्षणं पङ्क-रुहेक्षणानां, मैरेय-पानं वयमाचरामः।।८
वाराणसी-जह्नु-सुता-प्रयाग-गोदावरी-तीर्थ-विलोकनानि।
तेनैव मन्ये जगतः कृतानि, श्रीसुन्दरी-चिन्तनमेव यस्य।।९
आयात-यातेन भवाम्बु-राशौ, जातो महानेष मम प्रयासः।
मोक्षाय नाथस्य पद-प्रसादादङ्गीकृतः सम्प्रति कौल-मार्गः।।१०
नान्यं भजेऽहं न तथाऽन्यमीहे, नान्यं स्मरे नोऽपरमाश्रयामि।
कदापि नाहं परमार्थ-भावां, श्रीसुन्दरीं चेतसि विस्मरामि।।११
विलिख्य सिन्दूर-मयं सुराभिः, श्रीचक्रमित्थं निशि तर्पयन्तः।
श्रीसुन्दरीं चेतसि चिन्तयन्तः, कृपावलोकैर्वशयन्ति लोकान्।।१२

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो, यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः।
श्रीसुन्दरी-तर्पण-तत्पराणां, भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।।१३
जिह्वायां जप-साधनं, परिणतिः कौल-क्रमाभ्यासतो।
यः शान्तो नियतं पिबेत्, तदमृतं भुक्तिं च मुक्तिं व्रजेत्।।१४
करे पात्रं मुखे स्तोत्रं, आनन्दं हृदयाम्बुजे।
मूर्ध्नि श्रीगुरु-चिन्ता च, चिन्तनं किमतः परम्।।
करे माला मुखे हाला, वामे बाला सु-कोमला।
हृदये त्रिपुरा बाला, अन्न-शाला गृहे गृहे।।१५
अकुल-कुलमयन्ती सा, चक्र-मध्ये स्फुरन्ती।
मधुर-मधु पिबन्ती, साधकान् सु-तोषयन्ती।।
दुरितमपहरन्ती, सा कण्टकान् चर्वयन्ती।
जयति जय वदन्ती, सुन्दरी सा क्रीडयन्ती।।१६

***

छठवें 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने एवं **आनन्द-स्तोत्र** का पाठ करने के बाद चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए–

साधकों के लिए–**सोऽहं भविष्यामि न मे विषादः। सोऽहं भविष्यामि न मे विषादः। सोऽहं भविष्यामि न मे विषादः।**

❖❖❖

साधिकाओं के लिए–**साऽहं भविष्यामि न मे विषादः। साऽहं भविष्यामि न मे विषादः। साऽहं भविष्यामि न मे विषादः।**

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं
शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।

❖❖❖

काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः
शमनं यान्तु, शमनं यान्तु…।

'चक्र-पूजा' (पात्र-वन्दना) का माहात्म्य केवल खाने-पीने तक सीमित नहीं है। इसका माहात्म्य अति विस्तृत है। इसे **'अन्तर्याग'** कहा गया है। इसके विषय में **'आनन्द-स्तोत्र'** के निम्नलिखित वचन महत्त्व-पूर्ण हैं–

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो,
यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः।
श्रीसुन्दरी-तर्पण-तत्पराणां,
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।।

सप्तम पात्र-वन्दना

'जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्ति-तूर्य-परतश्चैतन्य-साक्षि-प्रदम्।
विद्युद्भास्कर-चन्द्र-वह्नि-धनुषो ज्योतिष्कला-व्यापितम्।।
ईडा-पिङ्गल-मध्यगा त्रिवलया सत्कुण्डली चोर्ध्वगा।
पात्रं सप्तम - भूषणेन तरुणानन्द-प्रदं पातु माम्।।
ॐ बुद्धि-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।

धूम्रे रूक्ष-विलोचन-त्रय-युते क्षुद्-व्याकुले चञ्चले!
दुश्चित्तेऽरि-भयावहे कलि-रते म्लानाम्बरे रूक्षभे।।
नीले मुक्त-शिरोरुहे सु-दशने सूर्पोदरि स्वोदिते!
पात्रं सप्तमिदं गृहाण सकलानन्द-प्रदं ते नमः।।
धूं धूमावत्यै पात्रं समर्पयामि नमः।।

सप्तम पात्र-वन्दना के द्वारा 'भगवती धूमावती' की वन्दना की जाती है और 'बुद्धि'-तत्त्व का शोधन किया जाता है।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।

स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

*कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।७

* 'धूमां' स्वीकृत्य 'श्रीवटुक-भैरव-स्तोत्रं' पठेत्—

श्रीवटुक-भैरव अष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्रम्

॥ ध्यान ॥

वन्दे बालं स्फटिक-सदृशं, कुन्तलोल्लासि-वक्त्रम्।
दिव्याकल्पैर्नव-मणि-मयैः, किङ्किणी-नूपुराढ्यैः॥
दीप्ताकारं विशद-वदनं, सुप्रसन्नं त्रिनेत्रम्।
हस्ताब्जाभ्यां बटुकमनिशं, शूल-दण्डौ दधानम्॥

॥अष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्रम्॥

ॐ भैरवो भूत-नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र-पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्॥१
श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त-कृत्।
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः, सिद्ध-सेवितः॥२
कङ्कालः काल-शमनः, कला-काष्ठा-तनुः कविः।
त्रि-नेत्रो बहु-नेत्रश्च, तथा पिङ्गल-लोचनः॥३
शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः, कङ्काली धूम्र-लोचनः।
अभीरुर्भैरवी-नाथो, भूतपो योगिनी-पतिः॥४
धनदोऽधन-हारी च, धन-वान् प्रतिभाग-वान्।
नाग-हारो नाग-केशो, व्योम-केशः कपाल-भृत्॥५
कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।
त्रि-लोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि-शिखी च त्रि-लोक-भृत्॥६
त्रिवृत्त-तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त-जन-प्रियः।
बटुको बटु-वेषश्च, खट्वाङ्ग-वर-धारकः॥७
भूताध्यक्षः पशु-पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु-लोचनः॥८
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर-प्रिय-बान्धवः।
अष्ट-मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान-चक्षुस्तपो-मयः॥९
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प-युक्तः शिखी-सखः।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भूधरात्मजः॥१०
कपाल-धारी मुण्डी च, नाग-यज्ञोपवीत-वान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा॥११

सातवें पात्र के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर साक्षी-भाव की प्राप्ति हेतु 'धूमां' स्वीकृत्य 'श्रीवटुक-भैरव-स्तोत्रं' पठेत् के अनुसार 'धूमा' ग्रहण करते हुए 'श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र' का पाठ करना चाहिए।

श्री बटुक-भैरव (सात्त्विक)

श्री बटुक-भैरव (राजसिक)

श्री बटुक-भैरव (तामसिक)

शुद्ध-नीलाञ्जन-प्रख्य-देहः मुण्ड-विभूषणः।
बलि-भुग् बलि-भुङ्-नाथो, बालो बाल-पराक्रमः।।१२
सर्वापत्-तारणो दुर्गो, दुष्ट-भूत-निषेवितः।
कामी कला-निधिः कान्तः, कामिनी-वश-कृद्-वशी।।१३
जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो, माया-मन्त्रौषधी-मयः।
सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः, प्रभ-विष्णुरितीव हि।।१४

।। फल-श्रुति ।।

अष्टोत्तर-शतं नाम्नां, भैरवस्य महात्मनः।
मया ते कथितं देवि! रहस्यं सर्व-कामदम्।।१
य इदं पठते स्तोत्रं, नामाष्ट-शतमुत्तमम्।
न तस्य दुरितं किञ्चिन्न च भूत-भयं तथा।।२
न शत्रुभ्यो भयं किञ्चित्, प्राप्नुयान्मानवः क्वचित्।
पातकेभ्यो भयं नैव, पठेत् स्तोत्रमतः सुधीः।।३
मारी-भये राज-भये, तथा चौराग्निजे भये।
औत्पातिके भये चैव, तथा दुःस्वप्नजे भये।।४
बन्धने च महा-घोरे, पठेत् स्तोत्रमनन्य-धीः।
सर्वं प्रशममायाति, भयं भैरव-कीर्त्तनात्।।५

***

सातवें 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने एवं **श्री बटुक-भैरव-स्तोत्र** का पाठ करने के बाद चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए–

सा बुद्धिः या साक्षि-प्रदम् ।
सा बुद्धिः या साक्षि-प्रदम् ।
सा बुद्धिः या साक्षि-प्रदम् ।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं
शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।

❖❖❖

काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः
शमनं यान्तु, शमनं यान्तु…।

अष्टम पात्र-वन्दना

खड्गं श्रीगुरु-पादुकां च तिलकं कण्ठेऽपि सारस्वतम्।
शत्रोर्वाग्-बल-शौर्य-बुद्धि-हरणं देह-स्थिते कारणम्।।
वाञ्छा-सिद्धि-करं मनः-स्थिर-करं चावर्जनं योषिताम्।
पात्रं चाष्टममष्ट-सिद्धि-करणं प्रौढ़-प्रसन्नं भजे।।
ॐ अहङ्कार-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।

मातः श्रीवगलामुखि त्रि-नयने स्वर्णाम्बरे स्वर्णभे!
सौवर्णासनगे सुधांशु-मुकुटे चम्प-स्त्रजा सु-प्रभे।।
पाशं मुद्गरकं विशाल-रसनां वज्रं दधाने करैः।
नाना-भूषण-भूषिते! प्रियतमं पात्रं गृहाणाष्टकम्।।
वं वगलामुख्यै पात्रं समर्पयामि नमः।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।

स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।८

*'अष्टमे पात्रे उल्लास-स्तवं पठेत्'।

अष्टम पात्र-वन्दना के द्वारा 'भगवती बगलामुखी' की वन्दना की जाती है और 'अहङ्कार'-तत्त्व का शोधन किया जाता है।

उल्लास-स्तवम्

अलि-पिशित पुरन्ध्री, भोग-पूजा-परोऽहम्।
बहु - विध - कुल - मार्गारम्भ - सम्भावितोऽहम्।।

आठवें पात्र के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर अहन्ता को पराहन्ता में लय करने की भावना से 'उल्लास-स्तव' का पाठ करना चाहिए।

❖❖❖

उल्लास-स्तव का पाठ करने के बाद चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए–

गुरु-चरण-रतोऽहं।
भैरवोऽहं।
शिवोऽहम्।।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं – शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।

काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः–शमनं यान्तु, शमनं यान्तु....।

पशु - जन - विमुखोऽहं, भैरवीमाश्रितोऽहम्।
गुरु - चरण - रतोऽहं, भैरवोऽहं शिवोऽहम्।।१
सकल - विबुध - दीक्षा - मन्त्र - शुद्धात्मकोऽहम्।
विविध - विबुध - वर्यैः - प्रार्थ्य - मार्गोन्मुखोऽहम्।।
विमल - तर - तरोऽहं, सुन्दरी - तत्परोऽहम्।
गुरु - चरण - रतोऽहं, भैरवोऽहं शिवोऽहम्।।२
सहज - पद - परोऽहं, पूज्य - पूज्यात्मकोऽहम्।
बहुल - सुख - मयोऽहं, सच्चिदानन्दितोऽहम्।।
शिव - शरण - गतोऽहं, भक्ति - लोकार्चितोऽहम्।
गुरु - चरण - गतोऽहं, भैरवोऽहं शिवोऽहम्।।३
शिवोऽहं शक्ति-रूपोऽहं, देवोऽहं दनुजोऽप्यहम्।
यक्षोऽहं मनुजश्चाहं, सर्वोऽहं सर्वदाऽस्म्यहम्।।४
मन्त्रोऽहं मन्त्र - कल्पोऽहं, मन्त्र-जाप्यहमेव च।
मन्त्र - कृन्मन्त्र - विच्चाहं, मन्त्रानन्दात्मकोऽस्म्यहम्।।५
पूजोऽहं पूज्य-रूपोऽहं, पूजकोऽप्यहमेव च।
पूजा-कृच्चास्मि पूजा-वित्, पूजा-रस-मयोऽप्यहम्।।६
एकेन शुष्क-चणकेन घटं पिवामि।
वापीं पिवामि सहसा लवणार्द्रकेन।।
आस्वाद्य मांसमलि - रोहित - मत्स्य - खण्डम्।
गङ्गां पिवामि यमुनां सह सागरेण।।७
वामे चन्द्र-मुखी मुखे च मदिरा पात्रं कराम्भोरुहे।
मूर्ध्नि श्रीगुरु-चिन्तनं भगवती-ध्यानास्पदं मानसम्।।
जिह्वायां जप-साधनं परिणतिः कौल-क्रमाभ्यासने।
ये सन्तो नियतं पिबन्ति सरसं ते भुक्ति-मुक्तिं गताः।।८
पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा, यावत् पतति भूतले।
उत्थाय च पुनः पीत्वा, पुनर्जन्म न विद्यते।।९
वामे रामा रमण-कुशला, दक्षिणे चालि-पात्रम्।
अग्रे मुद्राश्चणक-वटकौ, सूकरस्योष्ण-शुद्धिः।।
स्कन्धे वीणा सरस-मधुरा, सद्-गुरोः सत्कथायाम्।
कौलो मार्गः परम-गहनो, योगिनामप्यगम्यः।।१०

***

नवम पात्र-वन्दना

सर्वानन्द-करं सदा शिव-पदं सर्वार्थ-सम्पत्-प्रदम्।
साम्राज्यार्थ-करं समस्त-सुखदं चाज्ञान-विध्वंसनम्।।
आयुः-कीर्ति-यशो-विवर्द्धन-करं संसार-मोहच्छिदम्।
पात्रं लक्ष-गुणात्मकं च नवमं प्रौढ-प्रतापं भजे।।
ॐ शक्ति-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।

मातङ्गि श्याम-देहे शुक-कल-लपिते सावधाने दधाने!
पाथेब्जे पादमेकं मधु-मद-मुदिते शङ्ख-पात्रावतंसे।।
वीणा-वादानुरक्तेऽरुण-लसित-पठे रत्न-पीठोपरिस्थे!
मातः! स्वीकार्यमेतन्नवममलि-भृतं पात्रमाबद्ध-मौले।।
मां मातंग्यै पात्रं समर्पयामि नमः।।

नवम पात्र-वन्दना के द्वारा 'भगवती मातङ्गी' की वन्दना की जाती है और 'शक्ति'-तत्त्व का शोधन किया जाता है।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।

स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।९

*'नवमे पात्रे शक्ति-स्तवं पठेत्'-

शक्ति-स्तोत्र

ॐ नमामि ते देवि! पदारविन्दं, तवाश्रयामि प्रणमामि नित्यम्।
धेयामि गायामि वदामि नित्यमेवं, करोतु मम चित्त-वृत्तिः।।१
सीमन्तिनी काञ्चन-कान्ति-वर्णा, कादम्बरी घूर्णित-नेत्र-पद्मा।
कदम्ब-मालाञ्चित-केश-पाशा, कलावती कौलिक-चक्रवर्ती।।२
कन्दर्प-दर्पा दर-दीर्घ-नेत्रा, मुदावती बान्धव-चारु-वक्त्रा।
कला कलापा कल-हंस-नादा, कलावती काम-कला-विलासा।।३
यत्रैव सङ्गः कुल-सुन्दरीणां, देशान्तरे भावित-सिद्ध-मार्गः।
वाराणसी मोक्ष-करी च तत्र, तत्रैव गङ्गा-बुधि-सङ्गमं च।।४
पादारविन्दं कुल-सुन्दरीणां, देशान्तरे भावित-सिद्ध-मार्गः।
विहाय लोकेश्वर-मान-भावं, मदान्ध-कूपं किमलं विभर्ति।।५
कुरङ्ग-नेत्राऽसि कुरङ्ग-नेत्रा शिवा भवानीति शिवा भवानी।
मृगेन्द्र-मध्याऽसि मृगेन्द्र-मध्या, गौरीति गौरीसि भवानि भूयात्।।६
त्वं मारिणी नारक-हारिणी त्वं, त्वं कालिका कारण-कालिका त्वं।
वैरोचनी दुःख-विरोचनी त्वं, त्वं भैरवी त्वं भुवनेश्वरी त्वं।।७
दिगम्बरा पीन-पयोधरा सा, स्मेर-विलासा परि-मुक्त-केशा।
सदा-शिवा शान्त-गतासनस्था, श्यामाभिरामा पुरतो विभाति।।८
श्रीसुन्दरी-श्रीचरणारविन्दं, विमान-मन्ये न च पूजयामः।
न जल्पयामो न च कल्पयामो, न चाश्रयामो न च देवमन्यम्।।९
जम्बावली पावक-जाल-वर्णा, सौदामिनी दाडिम-वीज-वर्णा।
सुवर्ण-काञ्ची-परि-बद्ध-मध्या, सिद्धार्चिता सिद्ध-मयी विभाति।।१०
कादम्बरी-पान-परायणानां, कुलाङ्गनानां वदनारविन्दम्।
ध्यानं ममैवास्तु सदैव भूयात्, तद्-भावना-भावि-भूरि-भक्तिः।।११
त्वमेव बुद्धिश्च त्वमेव वृद्धिस्त्वमेव सिद्धिः स्वयमेव ऋद्धिः।
परा त्वमेवासि प्रमा त्वमेव, प्रमाण-भूतेति च रूपिणी त्वम्।।१२
त्वं कार्तिकी कौतुक-मूर्तिराप्वा, मयूर-पृष्ठार्पित-मूर्तिराप्वा।
चन्द्रानना चारु-चकोर-नेत्रा, किं स्तौमि मातस्तव पाद-पद्मम्।।१३
अत्युग्र-दन्ताग्र-धृतावनिस्त्वं, घोरानना घोर-गभीर-नादा।
संहार-विस्तार-विधान-कर्त्री, वाराहि! मातस्त्विदमेव सर्वम्।।१४

नवें पात्र के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर 'शक्ति-स्तव' का पाठ करना चाहिए।

कला त्वमेवासि त्वमेव काष्ठा, त्वमेव चात्माऽसि मनस्त्वमेव।
श्रीब्रह्म-शक्तिः स्वयमेव मातः, सत्य-स्वरूपाऽसि जगत् करोषि।।१५
त्वं वैष्णवी विष्णु-स्वरूपिणी त्वं, त्रैलोक्य-रक्षा-करणैक-दक्षा।
मृगेन्द्र-रूढा घन-नील-वर्णा, विश्वस्य रक्षा ह्यनिशं त्वमेव।।१६
नाना-कला-केलि-सुलोल-साङ्गी, पीन-स्तनी चन्द्र-मुखी कदाचित्।
न विस्मरामि न च विस्मरामि, न विस्मरामि कल-हंस-नादा।।१७
गतिस्त्वमेवासि गतिस्त्वमेव, मतिस्त्वमेवासि मतिस्त्वमेव।
स्मृतिस्त्वमेवासि स्मृतिस्त्वमेव, धृतिस्त्वमेवासि धृतिस्त्वमेव।।१८
मासोऽसि वर्षोऽसि युगोऽसि कल्पो, मन्वन्तरस्त्वं प्रलयो मुहूर्तः।
त्वं काल-रात्रिश्चिर-रात्रिरेव, एकार्णवः काल-मयी त्वकालः।।१९
वर्णेश्वरी त्वं पुर-वासिनी च, पुराश्रया पूर्ण-मयी त्वमेव।
त्वमुग्रतारैक-जटा त्वमेव, त्वमुन्मुखी नील-सरस्वती च।।२०
सर्पासना सर्प-विभूषणैव, धूमावती त्वं भवसीति मातः!।
मातङ्गिनी त्वं बगला च मातस्त्वमेव काली करवालिनी च।।२१
कात्यायनी काम-कला जयन्ती, सावित्रि-वर्णा मधु-मांस-लुब्धा।
त्वमन्न-पूर्णा नव-दुर्गिका च, कामात्मिका कामवती त्वमेव।।२२
गणेश्वरः षड्-वदनं कुबेरो, धनेश-पुत्रो रविजो जयन्तः।
त्वं चित्र-गुप्तोऽसि भवस्य कर्ता, यतीश्वरो वेद-मयी त्वमेव।।२३
त्वमेव सर्वोऽसि वदामि किं त्वां, त्वमेव सर्वाऽसि वदामि किं त्वां।
त्वमेव सर्वं तव किं ततोऽपि, लिङ्गाऽप्यलिङ्गोऽम्ब! त्वमेव सर्वम्।।२४

।। फल-श्रुति ।।

इदं स्तवेन्द्रं नियतं सु-पठ्यं, भक्तैक-चिह्नं सततं पठेद् यः।
पीक-स्वरः सर्व-जनानुरागो, दाता विनीतो गुरु-देव-भक्तः।।१
शतावधानो रण-काल-रुद्रो, जिह्वाग्र-वाणीर्युवती-पतिश्च।
स सर्वकः सर्व-रसान्वितोऽपि, पूर्ण-सु-शिल्पी पर-लोक-विष्णुः।।२

।। श्रीशक्ति-स्तोत्रं समाप्तम् ।।

***

नवें 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने एवं शक्ति-स्तोत्र का पाठ करने के बाद चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए-

श्रीब्रह्म-शक्तिः स्वयमेव मातः।
श्रीब्रह्म-शक्तिः स्वयमेव मातः।
श्रीब्रह्म-शक्तिः स्वयमेव मातः।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं-शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।

❖❖❖

काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः-शमनं यान्तु, शमनं यान्तु...।

दशम पात्र-वन्दना

ब्रह्मा-विष्णु-महेशानां, देवानां च विशेषतः।
दुर्लभं पावनं पात्रं, दशमं प्रणमाम्यहम्।।
ॐ भैरव-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।

मातः श्रीकमले सरोरुह-गते स्मेराननाम्भोरुहे!
कञ्ज-द्वन्द्व-वराभयान्वित-करे विद्युदि-विलासोज्ज्वले।।
पीनोत्तुङ्ग-कुचे कटाक्ष-विभवैश्चित्तं मुरारेर्वशम्।
कुर्वाणो दशमं गृहाण विमलं पात्रं सु-हारान्विते!।।
कं कमलायै पात्रं समर्पयामि नमः।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।१०

***

दशम पात्र-वन्दना के द्वारा 'भगवती कमला' की वन्दना की जाती है और 'भैरव'-तत्त्व का शोधन किया जाता है।

❖❖❖

दसवें 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए–

उद्यमो भैरवः।
उद्यमो भैरवः।
उद्यमो भैरवः।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं-शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।

❖❖❖

काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः-शमनं यान्तु, शमनं यान्तु…।

एकादश पात्र-वन्दना

पापघ्नं शान्ति - शुभदं, दिव्यं स्वादु - सुखालयम्।
पात्रमेकादशं वन्दे गुरु - सेवा - सुखागतम्।।
ॐ सर्व-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।

देवं नाग-निबद्ध-सुन्दर-जटां हस्तैः कृपाणाभये।
विभ्राणं त्रिशिखं वरं त्रि-नयनं सस्मेर-पञ्चाननम्।।
सु-श्वेतं सरसीरुहो परि-गतं चर्माम्बराडम्बरम्।
शम्भोः पात्रमहं ददामि सुधया चैकादशं पूरितम्।।
शं शम्भवे पात्रं समर्पयामि नमः।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।११

***

एकादश पात्र-वन्दना के द्वारा 'भगवान् शिव' की वन्दना की जाती है और 'सर्व'-तत्त्व का शोधन किया जाता है।

❖❖❖

ग्यारहवें 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए—

गुरु-सेवा-सुखागतम्।
गुरु-सेवा-सुखागतम्।
गुरु-सेवा-सुखागतम्।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं-शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।

❖❖❖

काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः-शमनं यान्तु, शमनं यान्तु…।

द्वादश पात्र-वन्दना

नाना-भूषण-भूषितं त्रि-नयनं लम्बोदरं तुन्दिलम्।
प्रोद्यत्-कोटि-दिवाकर-द्युति-निभं मातङ्ग-वक्त्रोज्ज्वलम्।।
विद्याढ्यं दश-बाहुमेक-दशनं राकेश-भाल-स्थलम्।
दिव्यं द्वादशमुत्तमोत्तममहं पात्रं गणेशं भजे।।
गं गणेशाय पात्रं समर्पयामि नमः।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।१२

***

बारहवें 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए–

गं गणेशाय नमः। गं गणेशाय नमः। गं गणेशाय नमः।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं–शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।
काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः–शमनं यान्तु, शमनं यान्तु…।

सभी तत्त्वों का शोधन करने के बाद द्वादश पात्र-वन्दना के द्वारा 'भगवान् गणेश' की वन्दना की जाती है।

त्रयोदश पात्र-वन्दना

श्रोत्र-प्रोत-सुकुण्डलं त्रि-नयनं दण्डं त्रिशूलायुधम्।
भूषा-पुञ्ज-विराजमान-वपुषं कर्पूर-पुञ्जोज्ज्वलम्।।
बालं श्रीवटुकं प्रसन्न-वदनं स्वच्छाम्बरोल्लासितम्।
पात्रं स्वादु-रसं त्रयोदशमहं संग्राहयामि प्रियम्।।

वं वटुकाय पात्रं समर्पयामि नमः।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।१४

***

तेरहवें 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए–

वं वटुकाय नमः। वं वटुकाय नमः। वं वटुकाय नमः।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं-शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।
काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः-शमनं यान्तु, शमनं यान्तु…।

त्रयोदश पात्र-वन्दना के द्वारा 'भगवान् बटुक' की वन्दना की जाती है।

चतुर्दश पात्र-वन्दना

सिन्दूरारुण - वस्त्र - लेपन - धरं हुङ्कार - भीमाननम्।
श्यामाम्भोधर-सन्निभं त्रि-नयनं सर्पोल्लसत्-कुण्डलम्।।
घण्टा स्वच्छ-कलाप-भूषित-कटिं दण्डं दधानं गदाम्।
क्षेत्राधीशमहं चतुर्दशमिदं पात्रं समभ्यर्चये।।
क्षं क्षेत्र-पालाय पात्रं समर्पयामि नमः।।१५

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।

***

चौदहवें 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए–

क्षं क्षेत्र-पालाय नमः। क्षं क्षेत्र-पालाय नमः।
क्षं क्षेत्र-पालाय नमः।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं–शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं।
काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः–शमनं यान्तु, शमनं यान्तु…।

चतुर्दश पात्र-वन्दना के द्वारा 'भगवान् क्षेत्रपाल' की वन्दना की जाती है।

पञ्च-दश पात्र-वन्दना

योगिन्यो मथ-मन्थराः कुल-पराः स्मेराननाम्भोरुहाः।
रक्तालेपन - वस्त्र - भूषण - धराः कार्त - स्वरोद्भास्वराः।।
स्वच्छाकार - विहार - सार - चतुराः प्राज्य - प्रमोदान्विताः।
पात्रं पञ्च-दशं सुधा-रस-भृतं गृह्णन्तु दत्तं मया।।
यां योगिनीभ्यः पात्रं समर्पयामि नमः।।१६

इदन्ता पात्र - सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु - पाश - समुच्छेद - कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य - सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।

***

पन्द्रहवें 'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए-

यां योगिनीभ्यां नमः। यां योगिनीभ्यां नमः।
यां योगिनीभ्यां नमः।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं-शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं। काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः-शमनं यान्तु, शमनं यान्तु…।

पन्द्रहवें पात्र-वन्दना के द्वारा 'श्री योगिनियों' की वन्दना की जाती है।

षोडश पात्र-वन्दना

निर्द्वन्द्वे नित्य-शुद्धे निरवधि-विभवे निःस्वरूपे निरीहे।
निर्माये निष्कलङ्के निरुपम-विषये निर्गुणे निर्विकारे।।
स्वेच्छाभूतानुभूते परम-तर-शिवे! षोडशं पात्रमेतत्।
पूर्णं विज्ञान-वादा विमल-तममहं स्वच्छ-वृत्तिं जुहोमि।।
पं पराम्बायै पात्रं समर्पयामि नमः।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज-समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलिनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।।१२

***

सोलहवें पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर चर्वण करते हुए निम्नलिखित का उच्चारण करना चाहिए–

पं पराम्बायै नमः। पं पराम्बायै नमः।
पं पराम्बायै नमः।

❖❖❖

पेयं चर्वणं लेहनं-शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं, शत्रु-मर्दनं। काम-क्रोध-लोभ-मोह अष्ट-पाशाः–शमनं यान्तु, शमनं यान्तु...।

षोडश पात्र-वन्दना के द्वारा 'पराम्बा' की वन्दना की जाती है।

'पूर्ण-पात्र' की वन्दना

पूर्णा श्री भुवनेश्वरी च कमला श्रीराज-राजेश्वरी।
पूर्णा भैरव-भैरवी च वटुका तारा तथा कालिका।।
पूर्णा श्रीवगला च धूम्र-वदना श्रीछिन्न-मस्ताम्बिका।
पूर्णं श्रीगुरु-पादुकामृत-रसं श्रीपूर्ण-पात्रं भजे।।

इदन्ता पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।
इदं पवित्रममृतं पिबामि भव-भेषजम्।
पशु-पाश-समुच्छेद-कारणं भैरवोदितम्।।
चित्तेः स्वातन्त्र्य-सारत्वाद्, तस्यानन्द-मयत्वतः।
तन्मयत्वाच्च भावानां, भावाश्चान्तर्हिता रसे।।
स्व-स्वातन्त्र्य-विकासाय, सु-रसः तेन पीयते।
तस्मादिमां सुधा-रूपां, पूर्णाहन्तां पिबाम्यहम्।।
स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

कारणं परमं दिव्यं भव-भैषज समन्वितं पिबामि जगतां मातः! प्रसन्ना भव भवात्मिके! कुं कुण्डलनी-मुखे इष्ट-देवता-स्वरूपे जिह्वाग्रे जुहोमि स्वाहा।

***

पूर्ण-'पात्र' के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर मिष्ठान्न आदि ग्रहण करना चाहिए और 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' कहना चाहिए तथा शान्ति-स्तोत्र, वीर-वन्दना, नीराजन-स्तुति, किङ्किणी-स्तोत्र एवं पुष्पाञ्जलि का पाठ कर 'पात्र-वन्दना' का समापन करना चाहिए।

सोलहवें पात्र-वन्दना के बाद 'पूर्ण-पात्र' की वन्दना की जाती है।

❖❖❖

पूर्ण-पात्र के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को यथा-स्थान रखकर मिष्ठान्न ग्रहण करते हुए निम्न-लिखित का उच्चारण करना चाहिए-

सर्वं खल्विदं पर-ब्रह्म।
सर्वं खल्विदं पर-ब्रह्म।
सर्वं खल्विदं पर-ब्रह्म।

❖❖❖

ॐ पूर्णस्य पूर्णमादाय,
पूर्णमेवावशिष्यते।
ॐ पूर्णस्य पूर्णमादाय,
पूर्णमेवावशिष्यते।
ॐ पूर्णस्य पूर्णमादाय,
पूर्णमेवावशिष्यते।

❖❖❖

अन्त में, 'पात्र' को शीतल कर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' कहकर 'शान्ति-स्तोत्र' आदि का पाठ करना चाहिए।

पूर्ण-पात्र-वन्दना के बाद 'पात्र' को शीतल कर शन्ति-स्तोत्र का पाठ किया जाता है।

❖❖❖

पात्र-शीतल-विधि (१) पूर्ण-पात्र के द्रव्य को ग्रहण करने के बाद 'पात्र' को अपने स्थान पर भूमि पर उलट कर रखते हैं तथा उस स्थान पर पुष्प डालकर माया-बीज (ह्रीं) बाँएँ हाथ की कनिष्ठा अँगुली से बिना किसी द्रव्य के लिखते हैं। अन्त में 'पात्र' को उठाकर रख लेते हैं और फिर शान्ति-स्तोत्र का पाठ करते हैं।

शान्ति-स्तोत्र

(प्रथम)

जयन्तु मातरः सर्वा, जयन्तु योगिनी - गणाः।
जयन्तु सिद्ध - डाकिन्यो, जयन्तु गुरवः सदा।।१
जयन्तु साधकाः सर्वे, विशुद्धाः कौलिकाश्च ये।
समयाचार - सम्पन्नाः, जयन्तु पूजकाः नराः।।२
अणिमाद्याश्च सिद्धाश्च, नन्दन्तु भैरवादयः।
नन्दन्तु देवताः सर्वे, सिद्ध - विद्याधरादयः।।३
ये चाम्नाय - विशुद्धाश्च, मन्त्रिणः शुद्ध - बुद्धयः।
सर्वदानन्द - हृदयः, नन्दन्तु कुल - पालकाः।।४
नन्दन्तु अणिमा - सिद्धा, नन्दन्तु कुल - साधकाः।
इन्द्राद्या देवताः सर्वे, तृप्यन्तु वास्तु - देवताः।।५
सूर्य - चन्द्रादयो देवाः, तृप्यन्तु मम भक्तितः।
नक्षत्राणि ग्रहा योगाः, करणा राशयश्च ये।।६
तृप्यन्तु पितरः सर्वे, मासाः संवत्सरादयः।
खेचरा भूचराश्चैव, तृप्यन्तु मम भक्तितः।।७
अन्तरिक्ष-चरा ये च, ये चान्ये देव - योनयः।
सर्वे ते सुखिनो यान्तु, सर्पा नद्याश्च पक्षिणः।।८
पशवः स्थावराश्चैव, पर्वताः कन्दराः गुहाः।
ऋषयो ब्राह्मणाः सर्वे, शान्तिं कुर्वन्तु मे सदा।।९
तीर्थानि बहु-प्रसिद्धा, ये चान्ये पुण्य - भूमयः।
वृद्धा पति-व्रता यास्ताः, शान्तिं कुर्वन्तु मे सदा।।१०
शिवं सर्वत्र मे चाऽस्तु, पुत्र - दारा - धनादिषु।
राजानः सुखिनो यान्तु, मित्राः नन्दन्तु मे सदा।।११
साधका सुखिनः सन्तु, शिवं तिष्ठन्तु सर्वदा।
शुभा मे वन्दिताः सन्तु, मित्रा तिष्ठन्तु पूजकाः।।१२

।। श्रीरुद्र-यामले शान्ति-स्तोत्रम्।।

***

शान्ति-स्तोत्र

(द्वितीय)

अनादि - घोर - संसार - व्याधि - ध्वंसैक - हेतवे।
नमः श्रीनाथ - वैद्याय, कुलौषधि - प्रदायिने।।१
योगिनी - चक्र - मध्यस्थं, मातृ - मण्डल - वेष्टितम्।
नमामि शिरसा नाथं, भैरवं भैरवी - प्रियम्।।२
आपदो दुरितं रोगाः, समयाचार - लङ्घनात्।
ते सर्वेऽत्र व्यपोहन्तु, दिव्य - चक्रस्य मेलनात्।।३
आयुरारोग्यमैश्वर्यं, कीर्तिर्लाभः सुखं जयः।
कान्तिर्मनोरथश्चास्तु, पान्तु सर्वाश्च देवताः।।४
यस्यार्चनेन विधिना, किमपीह लोके।
कर्म - प्रसिद्धमिति, नाम - फलं प्रसूते।।
तं सन्ततं सकल - साधक - चित्त - वृत्तिः।
चिन्तामणिं कुल - गणाधिपतिं नमामि।।५
रक्ताम्बरं ज्वलन - पिङ्ग - जटा - कपालम्।
ज्वालावली - कुटिल - चन्द्र - धरं प्रचण्डम्।।
बालार्क - धातु - कनकाचल - धातु - वर्णम्।
देवी - सुतं वटुक - नाथमहं भजामि।।६
ऊर्ध्वे ब्रह्माण्डतो वा दिवि, भुवन-तले भू-तले निस्तले वा।
पाताले वानले वा, पवन-सलिलयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा।।
क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च, कृत-पदा धूप-दीपादि-मांसैः।
प्रीता देव्यः सदा नः शुभ-बलि-विधिना पान्तु वीरेन्द्र-वन्द्याः।।७
देहस्थाखिल-देवता गज-मुखाः क्षेत्राधिपा भैरवाः।
योगिन्यो वटुकाश्च यक्ष-पितरो भूताः पिशाचा ग्रहाः।।
अन्ये भूचर-खेचरा दिशि-चरा वेतालकाश्चेटका-
स्तृप्यन्तां कुल-पुत्रकस्य पिवतः पानं स-दीपं चरुम्।।८

शान्ति - स्तोत्र कई प्रकार के हैं। यहाँ रुद्र-यामल और देवी-रहस्य में वर्णित शान्ति-स्तोत्र दिए जा रहे हैं। इनमें से किसी एक अथवा दोनों शान्ति-स्तोत्र का पाठ किया जा सकता है। पाठ मध्यम स्वर में मधुर कण्ठ से करना चाहिए।

ब्रह्मा श्रीः-शेष-दुर्गा गुह-वटुक-गणा भैरवाः क्षेत्रपालाः।
वेतालादित्य-रुद्र-ग्रह-वसु-मनु-सिद्धाप्सरो गुह्यकाद्याः।।
भूता गन्धर्व-विद्याधर-ऋषि-पितृ-यक्षासुरा हि प्रभूताः।
योगीशाश्चारणाः किंपुरुष-मुनि-सुराश्चक्रगाः पान्तु सर्वे।।९
ये वाम-द्वैत-भावा हरि-चरण-पराः शङ्करा शक्तिपा ये।
निद्रावानन्दं येषां प्रसरति रसना नित्य-पूजादि-युक्ता।।
कारुण्यं वापि येषां मनसि स-विनयां ये परानन्द-सक्ताः।
तेषां लीला महेशी विरतु कुल-रता सर्वतः सर्व-दैन्या।।१०
या दिव्य-क्रम-पालिकाः क्षिति-गता या देवतास्तोयगाः।
या नित्यं प्रथित-प्रभाः शिखि-गता या मातरिश्वाश्रयाः।।
या व्योमामृत-मण्डलामृत-मया या सर्वदा सर्वगा-
स्ताः सर्वाः कुल-मार्ग-पालन-पराः शान्तिं प्रयच्छन्तु मे।।११
सत्यं चेद् गुरु-वाक्यमेव पितरो देवाश्च चेद् योगिनी-
प्रीतिश्चेत् पर-देवता च यदि चेद् वेदाः प्रमाणाश्च चेत्।।
शाक्तेयं यदि दर्शनं भवति चेदाज्ञेयमेषाऽस्ति चेत्-
सन्त्यत्रापि च कौलिकाश्च यदि चेत् स्यान्मे जयः सर्वदा।।१२
अनेक-कोट्याः कुल-योगिनीनामन्तर्बहिः कौलिक-चक्र-संस्थाः।
निपीयमानेन परामृतेन प्रीता प्रसन्ना वरदा भवन्तु।।१३
शिवाद्यवनि-पर्यन्तं ब्रह्मादि-स्तम्ब-संयुतम्।
कालाग्न्यादि-शिवान्तं च जगद् यज्ञेन तृप्यतु।।१४
नन्दन्तु साधक - कुलान्वय - दर्शका ये।
सृष्ट्याद्यनाख्य-चतुरुक्त-महाऽन्वया ये।।
नन्दन्तु सर्व-कुल-कौल-रताः परे ये-
ऽप्यन्ये विशेष-पद-भेदक-शाम्भवा ये।।१५
नन्दन्तु सिद्ध-गुरवः स्व-गुरु-क्रमौघाः।
ज्येष्ठानुगाः समयिनो वटुकाः कुमार्यः।।
षड्-योगिनी-प्रवर-वीर-कुले प्रसूताः।
नन्दन्तु भूमि-पति-गो-द्विज-साधु-लोकाः।।१६

पात्र-शीतल-विधि (२)

पात्र को शीतल करने हेतु दूसरी विधि यह है कि पूर्ण-पात्र की वन्दना के बाद चक्रेश्वर सभी पात्रों में जल देकर, प्रत्येक साधक की शक्ति के 'पात्र' का जल साधक के पात्र में मिला देते हैं और फिर उन-उन पात्रों के जल से उन-उन शक्ति-साधकों के मस्तक का अभिसिञ्चन करते हैं। यथा-

नन्दन्तु नीति-निपुणा निरवद्य-निष्ठाः।
निर्मत्सरा निरुपमा निरुपद्रवाश्च।।
नित्यं निरञ्जन-रता गुरवो निरीहाः।
शाक्ताश्च शान्त-मनसो हृत-शोक-शङ्काः।।१७
नन्दन्तु योग-निरताः कुल-योग-युक्ताः।
आचार्य-सामयिक-साधक-पुत्रकाश्च।।
गावो द्विजा युवतयो यतयः कुमार्यो।
धर्मे भवन्तु निरता गुरु-भक्ति-युक्ताः।।१८
जयन्तु देव्यो हर-पाद-पङ्कजं प्रसन्न-धामामृत-मोक्ष-दायकम्।
अनन्त-सिद्धान्त-मति-प्रबोधकं नमामि चाष्टाष्टक-योगिनी गणम्।।१९
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-योगीन्द्र-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः।।२०
शिवमस्तु सर्व-जगतां, पर-हित-निरता भवन्तु भूत-गणाः।
दोषाः प्रयान्तु शान्तिं, सर्वत्र जनाः सुखिनो भवन्तु।।२१
दासतां यातु भूपालः, शत्रवो यान्तु हीनताम्।
जगति वश्यमायान्तु, विघ्ना नश्यन्तु सर्वतः।।२२
कुलाभिनन्दिनी प्रीता, कुलीना सन्तु पूजकाः।
शक्तिः भक्ति-समायुक्ता, सुखं जीवन्तु साधकाः।।२३
।।देवी-रहस्ये, एक-विंश-पटले शान्ति-स्तोत्रम्।।

***

अभिसिञ्चन-मन्त्र

ॐ नश्यन्तु विपदः सर्वाः,
सम्पदः सन्तु सुस्थिरा।
अभिषेकेन पूर्णेन,
पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।।

❖❖❖

अभिषेक के बाद निम्नलिखित मन्त्रों का पाठ करते है-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं,
पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय,
पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः।
ॐ शान्तिः।
ॐ शान्तिः।
ॐ शान्तिरेव शान्तिः।
ॐ महा-शान्तिः।
ॐ सर्वापच्छान्तिः।

अन्त में, सब मिलकर शान्ति-स्तोत्र का पाठ करते हैं।

वीर-वन्दनाष्टक

जगत्-त्रयाभ्यर्चित-शासनेभ्यः, परार्थ-सम्पादन-कोविदेभ्यः।
समुद्धृत-क्लेश-महोरगेभ्यो, नमो नमः साधक-नायकेभ्यः।।१

प्रहीण-सर्वाश्रय-वासनेभ्यः, सर्वार्थ-तत्त्वोदित-साधनेभ्यः।
सर्व-प्रजाभ्युद्धरणोदितेभ्यो, नमो नमः साधक-नायकेभ्यः।।२

निस्तीर्ण-संसार-महार्णवेभ्यः, तृष्णा-लतोन्मूलन-तत्परेभ्यः।
जरा-रुजा-मृत्यु-निवारकेभ्यो, नमो नमः साधक-नायकेभ्यः।।३

सद्धर्म-रत्नाकर-भाजनेभ्यो, निर्वाण-मार्गोत्तम-देशिकेभ्यः।
सर्वत्र-सम्पूर्ण-मनोरथेभ्यो, नमो नमः साधक-नायकेभ्यः।।४

लोकानुकम्पाभ्युदितादरेभ्यः, कारुण्य-मैत्री-परिभावितेभ्यः।
सर्वार्थ-चर्या-परिपूरकेभ्यो, नमो नमः साधक-नायकेभ्यः।।५

विध्वस्त-निःशेष-कुवासनेभ्यो, ज्ञानाग्निना दग्धमलेन्धनेभ्यः।
प्रज्ञा-प्रतिज्ञा-परिपूरकेभ्यो, नमो नमः साधक-नायकेभ्यः।।६

सर्वार्थिताशा-परिपूरकेभ्यो, वैनेय-पद्माकर-बोधकेभ्यः।
विस्तीर्ण-सर्वार्थ-गुणाकरेभ्यो, नमो नमः साधक-नायकेभ्यः।।७

अनन्त-कर्मार्जित-शासनेभ्यो, ब्रह्मेन्द्र-रुद्रादि-नमस्कृतेभ्यः।
परस्परानुग्रह-कारकेभ्यो, नमो नमः साधक-नायकेभ्यः।।८

।।देवी-रहस्ये वीर-वन्दनाष्टकम्।।

***

'शान्ति-स्तोत्र' के पाठ के बाद 'वीर-वन्दनाष्टक'-स्तोत्र के द्वारा 'चक्र-पूजा' अथवा 'पात्र-वन्दना' में उपस्थित सभी साधक पूजा में एक दूसरे के प्रति अनुग्रह प्रकट करने हेतु परस्पर नमन करते हैं।

नीराजन स्तुति

जय देवि! जय देवि!
जय विश्वाधारे जय विश्वाधारे!,
दीनानाथोद्धरण - प्रवणे जन - सारे।
त्वत्-पद-पद्मे पद्मे! विधृत - व्यापारे!,
मयि दीने कुरु करुणा करुणामृत-पारे!।

जय देवि! जय देवि।।१

अमृतोदधि-मध्य-स्थित-नव-रत्न-द्वीपे,
विष्वक-विकसित-सुर-तरु-चम्पक-नीपे।
नाना-कुसुमामोदिनि! विधुतागरु-धूपे!,
चिन्तामणि-भवनेङ्गण-तिष्ठत्-सर-भूपे!।

जय देवि! जय देवि०।।२

माणिक्योज्ज्वल-चत्वर-सिंहासन-शोभे,
शिव-पञ्चक-मञ्चे चित-जन-लोचन-लोभे।
सुश्वेतातप - वरणे चल - चामर - शोभे!,
ध्याये भवतीमनिशं कृत - जगदारम्भे!।

जय देवि! जय देवि०।।३

दलित-जपा-कुसुमोपम-वसनाच्छन्नाङ्गीम्,
तरुणारुण-करुणा-प्रद-किरणावलि-भृङ्गीम्।
दधतीं रचनां नयने यमुना - तारङ्गीम्,
कलयन्तीं कुच - कोशे सुषमा नारङ्गीम्।

जय देवि! जय देवि०।।४

शर-चम्पक-वाणासन-पाशोल्लसिताम्,
मलयानिल-परिवारित-मुख-पद्म-श्वसिताम्।
बालाकर - मण्डित - चूडा - तट - महिमाम्,
ज्योतिस्त्रितयालंकृत-नयन-त्रय-सहिताम्।

जय देवि! जय देवि०।।५

पशुपति-यन्त्रण-पट-तर-रोमावलि-यूथाम्,
मन्मथ-तस्कर-गुप्ति-क्षमन-भी-कूपाम्।

'वीर-वन्दना' के बाद सभी साधक मिलकर मधुर स्वर से 'नीराजन'-स्तुति पढ़ते हैं। यहाँ 'श्रीत्रिपुर-सुन्दरी'-सम्बन्धी एक प्राचीन 'नीराजन'-स्तुति दी जा रही है।

'नीराजन'-स्तुति में सभी साधक खड़े होकर क्रम से भगवती के यन्त्र अथवा चित्र के सम्मुख 'आरति' करते हैं।

सबसे पहले 'चक्रेश्वर' नीराजन-स्तुति का पाठ करते हैं और 'आरति' करते हैं। फिर क्रम से उपस्थित सभी साधक 'आरती' करते हैं।

प्रमदालम्बि-शिखा-मणि-वृन्दारक-भूपाम्,
कमलासन-हरि-हर-मुख-चिन्त्यामित-रूपाम्।
जय देवि! जय देवि०।।६

काली वगला बाला तारा भुवनेशी,
वाराही मातङ्गी कमला वचनेशी।
छिन्ना दुर्गा गङ्गा काशी कामेशी,
त्वत्तो नान्यत् किञ्चित् क्वचिद्-रसम्पेशी।
जय देवि! जय देवि०।।७

त्वं भूमिस्त्वं सलिलं त्वं तेजः प्रबलम्,
त्वं वायुस्त्वं व्योमस्त्वं चित्तं विमलम्।
त्वं जीवस्त्वं चेशस्त्वं ब्रह्मा ह्यमलम्,
सत्यानृतयोरन्यत् त्वत्तः किं सकलम्।
जय देवि! जय देवि०।।८

कुल-कुण्डे त्वं कुरु हे देवि! प्रस्वापम्,
स्वाधिष्ठाने मिहिरायुत-दीधित-तापम्।
नीला नाभौ कण्ठे शशिभा-हृत-पापम्,
वर्षत्यामृत - विन्दावानन्दावापम्।
जय देवि! जय देवि०।।९

त्वत्-पद-पद्मे चित्तं त्रिपुरे! मे रमताम्,
तत्रैव प्रति - वेलं मौलिर्मे रमताम्।
यातायातः क्लेशः सद्यः संशमताम्,
याचे भूयो भूयो भवतामाभवताम्।
जय देवि! जय देवि०।।१०

कर-ताली-दानोत्सुक-सुर-विततानन्दे!,
नीराजन-काले तव मुनि-जन-नुत-वेदे!।
चरणानत-साम्राज्ये परिहृत-भव-खेदे!,
विश्व-विलासिनि, परमाराध्यनि! त्वं निर्वेदे!।
जय देवि! जय देवि०।।११

।। श्रीत्रिपुर-सुन्दरी नीराजन-स्तुतिः।।

***

नीराजन-स्तुति
नीराजन-स्तुति में जब कोई एक साधक 'आरति' करता है, तब दूसरा कोई साधक 'घण्टी' बजाता है। ऐसा क्रम से तब तक करते हैं, जब तक सभी साधक 'आरति' नहीं कर लेते हैं। अन्त में, 'चक्रेश्वर' पुनः 'आरति' करते हैं और जल छोड़कर 'आरति' सबको मस्तक पर स्पर्श कराने के लिए देते हैं।

श्री काली-नीराजन स्तुति

अयि गिरि-नन्दिनि नन्दित-मेदिनि विश्व-विनोदिनि नन्दि-नुते!
गिरिवर-विन्ध्य-शिरोधि-निवासिनि विष्णु-विलासिनि जिष्णुनुते!
भगवति हे शिव-कण्ठ-कुटुम्बिनि भूरि-कुटुम्बिनि भूत-कृते!
जय-जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैल-सुते।।१

अयि जगदम्ब! कदम्ब-वन-प्रिय-वासिनि वासिनि वास-रते!
शिखर-शिरोमणि-तुङ्ग-हिमालय-शृङ्ग-निजालय-मध्य-गते।
मधु - मधुरे मधुरे मधुरे मधु - कैटभ - भञ्जनि रास - रते!
जयँ जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैल-सुते।।२

सुर-वर-वर्षिणि दुर्धर-धर्षिणि दुर्मुख-मर्षिणि घोष-रते!
दनु-जन-रोषिणि दुर्मुख-शोषिणि भव-भय-मोचनि सिन्धु-सुते!
त्रिभुवन-पोषिणि शङ्कर-तोषिणि किल्विष-मोचनि हर्ष-रते!
जय-जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैल-सुते।।३

अयिशत-खण्ड-विखण्डित-रुण्ड-वितुण्डित-शुण्डगजाधिपते!
रिपु-गज-दण्ड-विदारण-खण्ड-पराक्रम-चण्ड-निपातित-
मुण्ड-मठाधिपते!
जय-जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैल-सुते।।४

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोरम - कान्ति - युते!
श्रुति रजनी रजनी रजनी रजनी - कर चारु - युते!
सुनयन - विभ्रमर - भ्रमर - भ्रमराधिपते!
जय-जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैल-सुते।।५

सुर-ललना-प्रतिथे वितथे वितथ-नियोत्तर-नृत्य-रते।
धुधु-कुट धुङ्गड़-धुङ्गड़-दायक दान-कुतूहल-गान-रते।
धंकुट धुंकुट धिद्धिमिति ध्वनि धीर मृदङ्ग-निनाद-रते!
जय-जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैल-सुते।।६

श्री काली-नीराजन-स्तुति

प्रस्तुत श्री काली-नीराजन-स्तुति भी प्राचीन है और महाकवि कालिदास द्वारा विरचित है। इसके द्वारा भी 'नीराजन' कर सकते हैं।

जय जय जाप्य-जये जय-शब्द-परिस्तुति-तत् तत्पर विश्व-नुते!
झिणि झिणि झिणि झिणि झिंकृत नूपुर-झिंजित मोहित भूत-रते!
धुनटित नटार्द्ध-नटी-नट-नायक नायक-नाटित-नूपुरुते!
जय-जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैल-सुते।।७

महित महाहव-मल्लिम तल्लिम दल्लित-वल्लज भल्ल-रते!।
विरचित पल्लिक पुल्लिक मल्लिक झल्लिक-मल्लिक वर्ग-युते।
जय-जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैल-सुते।।८

कृत कृत कुल्ल-समुल्लस तारण तल्लिज-वल्लव साल-लते!
जय-जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्य-कपर्दिनि शैल-सुते।।९

।। प्रार्थना ।।

या माता मधु-कैटभ - प्रमथिनी या माहिषोन्मूलनी।
या धूम्रेक्षण-चण्ड-मुण्ड-मथिनी या रक्त - वीजाशनी।।
शक्तिः शुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-दलिनी सा सिद्धि-लक्ष्मी परा।
सा चण्डी नव-कोटि-शक्ति-सहिता मां पातु विश्वेश्वरी।।

।। फल-श्रुति ।।

कालिदास-कविराज-कल्पितं कालिका-स्तवनमिन्द्र-राज्यदम्।
यः पठेत् प्रति-दिनं नुति-पूर्वं कालिका-हृदय-तुष्टि-कृद् भवेत्।।१

।। कालिदास-कृत त्रिगुणात्मिका-कालिका-स्तोत्रम्।।

***

किङ्किणी-स्तोत्र

किं किं दुःखं सकल-जननि ! क्षीयते न स्मृतायाम्।

का का कीर्तिः कुल-कमलिनि प्राप्यते नार्चितायां।।

किं किं सौख्यं सुर-वर-नुते! प्राप्यते न स्तुतायाम्।

कं कं योगं त्वयि न तनुते चित्तमालम्बितायाम्।।१

स्मृता भव-भय-ध्वंसि, पूजिताऽसि शुभङ्करि।

स्तुता त्वं वाञ्छितं देवि! ददासि करुणाकरे।।२

परमानन्द-बोधाद्-विरूपे! तेजः-स्वरूपिणि,

देव-वृन्द-शिरो-रत्न-निघृष्ट-चरणाम्बुजे!

चिद्-विश्रान्ति-महा-सत्ता-मात्रे मात्रे! नमोऽस्तु ते।।३

सृष्टि - स्थित्युपसंहार - हेतु - भूते सनातनि!

गुण-त्रयात्मिकाऽसि त्वं, जगतः करणेच्छया।।४

अनुग्रहाय भूतानां, गृहीत - दिव्य - विग्रहे!

भक्तस्य मे नित्य-पूजा-युक्तस्य परमेश्वरि!।।५

ऐहिकामुष्मिकी सिद्धिं देहि त्रिदश-वन्दिते!

ताप-त्रय-परिम्लान-भाजनं त्राहि मां शिवे!।।६

नान्यं वदामि न शृणोमि न चिन्तयामि।

नान्यं स्मरामि न भजामि न चाश्रयामि।।

त्यक्त्वा त्वदीय - चरणाम्बुजमादरेण।

मां त्राहि देवि! कृपया, मयि देहि सिद्धिम्।।७

अज्ञानाद् वा प्रमादाद् वा, वैकल्यात् साधनस्य च।

यन्न्यूनमतिरिक्तं वा, तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि।।८

द्रव्य-हीनं क्रिया-हीनं, श्रद्धा-मन्त्र-विवर्जितम्।

तत्सर्वं कृपया देवि!, क्षमस्व त्वं दया-निधे!।।९

यन्मया क्रियते कर्म, तन्महत् स्वल्पमेव वा।

तत्सर्वं च जगद्धात्रि!, क्षन्तव्यमयमञ्जलिः।।१०

***

'नीराजन' के बाद प्रस्तुत 'किङ्किणी'-स्तोत्र के द्वारा पुष्पाञ्जलि अर्पित की जाती है। 'किङ्किणी'-स्तोत्र का पाठ भी साधक-गण खड़े होकर करते हैं। हाथों में पुष्प लेकर कर-बद्ध हो, पूरे स्तोत्र का पाठ किया जाता है। पाठ के पूर्ण होने पर 'पुष्पों' को क्रम से सभी साधक भगवती के यन्त्र अथवा चित्र के समक्ष समर्पित करते हैं और साष्टाङ्ग प्रणाम करते हैं।
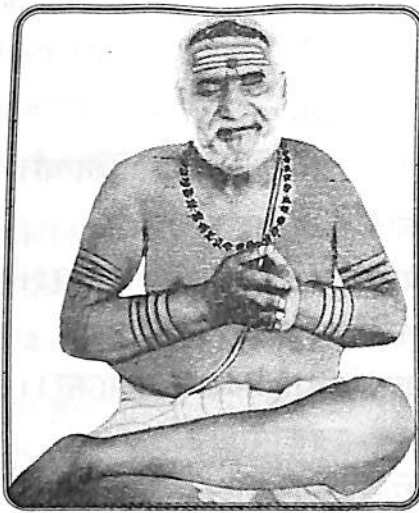
'कौल-कल्पतरु' पण्डित देवीदत्त शुक्ल द्वारा रचित

चक्र-पूजा के स्तोत्र (पात्र-वन्दना)

(हिन्दी-भावानुवाद)

पहली पात्र-वन्दना

तीनों गुरु गण-पति तीनों पीठ भैरवहिं, सिद्धौघ आदि कँह मन में धरत हौं।
तीनहू बटुक-नाथ दोनों पद श्रेष्ठ-तम, दूतिन को क्रम बूझि-सूझि सुमिरत हौं।
आठो वीर भैरवान चौंसठ जोगिनीन, नवो मुद्रा वीरावली-पञ्चक गुनत हौं।
मन्त्र-राज मालिनी के साथ-साथ भक्ति-युक्त, ऐसे गुरु-मण्डल को वन्दन करत हौं।।
भैरव ललाट मध्य चन्द्र-कला लसै जौन, ताकी सुधा-धार कीन याको सराबोर है।
क्षेत्राधीश जोगिनै औ महा-सिद्धि आदि द्वारा, पूजित विशेष करि भावनो विभोर है।
आनँद-स्वरूप यह-महा-आत्मा-रूप यह, त्रिखण्डामृत की शक्ति भरी पोर-पोर है।
प्रथम विशुद्धि-प्रद पात्र कहँ अभिराम, वन्दन करत जौन कर-गत मोर है।।

रूप कराल भयानक नेत्र, हँसी अति अट्ट महा-भय-कारी।
धारहु भीषण मुण्डन माल, गहौ कर में अति तीक्ष्ण दुधारी।।
भक्तन को चित दै वर देहु, हरौ दुख दारुण भीतिहु भारी।
पात्र तिहार करौं यह पान, दया-मयि 'कालिका' मातु हमारी।।१

***पहली पात्र-वन्दना** के बाद पात्र-स्वीकार कर गुरु का ध्यान करे और गुरु-स्तोत्र का पाठ करे-

---

गुरु-स्तव

(१)

सुन्दर गौर स्वरूप ललाम, विलोकि विलोचन कामहु लाजै।
माथ सु-सेन्दुर अङ्गनि भस्म, सु-वामहि भामिनि की छवि छाजैं।।
गोमुखि हाथ सु-ध्यान निमग्न, जपैं वर मन्त्र सदा शुभ काजै।
श्रीगुरु - देव महान उदार, महेश-स्वरूप प्रसन्न विराजैं।।१
दै वर मन्त्र हरैं पशु-भाव, बनावत वीर सदा सुख पावैं।
देत रहैं उपदेश सदैव, प्रदानत ज्ञान सु - राह दिखावैं।।
दै सम बुद्धि मिटावत भेद, करैं निज तुल्य कु-भीति भगावैं।
श्रीगुरु आनँद-रूप सु-सिद्ध, ऋषीश्वर नाथ भले मन भावैं।।२
लाय दया उर तत्त्व प्रबोधत, अज्ञन को वर विज्ञ बनावैं।
जा विधि पार करैं भव-सिन्धुहिं, भक्तन ताहि विचारि बतावैं।।
'हुं' करि दूरि भगावत आपद, भ्रान्तन की सब भ्रान्ति मिटावैं।
श्रीगुरु-देव अपार दया-मय, पामर पापिन को अपनावैं।।३
दिव्य स्वरूप प्रसन्न मुखाकृति, लोचन लोल दया-रस गारे।
भक्तन को हित ही नित सोचत, दारुण दुःख मिटावन-हारे।।
शम्भु-समान समाधि लगावत, विघ्नन को करि एक किनारे।
श्रीगुरु-देव दयालु महा-प्रभु, शील-निधान विवेक सँवारे।।४
जा विधि होत त्रि-ताप विनष्ट, उपाय बताय दया दिखरावैं।
जीवन-नाव लगै चलि पार, सु-मारग आपुहि धाय दिखावैं।।
पूर्ण दयालु विलक्षण मूर्ति, निरन्तर अम्ब-चरित सुनावैं।
श्रीगुरु-देव उदार महान, सु-भक्तन के मन में घर पावैं।।५

(२)

सुन्दर स्वरूप भव्य तेज-पूर्ण गौर-वर्ण, वाम में बसति श्यामा अति छवि-धाम है।
भाल पै त्रिपुण्ड सोहै ताके मध्य रक्त-विन्दु, अधर पै हास्य-रेखा लसति ललाम है।
कर माँहि अक्ष-माल जपत रहत मन्त्र, ध्यान में बितावत सदैव आठों याम है।
परम उदार साधु क्षमा-शील ज्ञान-वन्त, शङ्कर-स्वरूप गुरु-देव को प्रणाम है।।१
अज्ञता मिटाय देत भीरुता भगाय देत, धीरता बढ़ाय देत करै पूर्ण-काम है।
पशुता विलुप्त कर वीरता प्रदानै चारु, कुलता बढ़त आपु जासों अभिराम है।
कोऊ होय कैसो होय भेद-भाव करै नाँहि, राह पै लगाय देत ऐसो दया-धाम है।
परम उदार साधु क्षमा-शील ज्ञान-वन्त, शङ्कर-स्वरूप गुरु-देव को प्रणाम है।।२
मन्त्र दै कै करि देत पूरि अभिलाष सारी, साधन-विधान दै कै करै सिद्ध काम है।
करि पूर्ण अभिषेक पाश-बन्ध काटि देत, कौलिक बनाय लेत दै कै कुल-नाम है।

तत्त्व का प्रबोध होत विकसत दिव्य ज्ञान, मिलत परम सुख और हू स्व-धाम है।
परम उदार साधु क्षमा-शील ज्ञान-वन्त, शङ्कर-स्वरूप गुरु-देव को प्रणाम है।।३
जाकी पद-पादुका प्रपूजि होत सिद्ध नर, करत अधम तक जग माँहि नाम है।
जाकी कृपा-कोर लहि दीन जन होत सुखी, अज्ञ हू बनत विज्ञ पावत स्व-धाम है।
जाके पास कीन्हे वास मिलत सुपास अति, मातु को खवास जात बनि अभिराम है।
परम उदार साधु क्षमा-शील ज्ञान-वन्त, शङ्कर-स्वरूप गुरु-देव को प्रणाम है।।४
विधि-रूप हरि-रूप शिव-रूप ब्रह्म-रूप, गुरु को स्वरूप ऐसो जान सकै कौन है!
चर औ अचर माँहि जो अखण्ड मण्डल सों, व्याप्त रहै ताको भेद देय गुरु जौन है।
अज्ञता से आँधर को ज्ञान की शलाका लाय, देत है प्रकाश सदा सुख केरो भौन है।
ऐसे पुरुषोत्तम को सतत प्रणाम मेरो, जाको ध्यान किए होत मन शान्त और मौन है।।५

***

दूसरी पात्र-वन्दना

पेयन सहित हेम-पात्र मीन रस-पूर्ण, दयिता दयालु दियौ दया मन करि कै।
किञ्चित चपल रक्त-पङ्कज सु-लोचन ते, हेरति है याको तहाँ चाव उर धरि कै।
थापि कर माहिं याको परम विशुद्ध शुद्धि, खण्ड अति स्वादु-भरो वाम सों पकरि कै।
आनँद-विवर्धक द्वितीय पात्र श्रेष्ठ कहँ, वन्दन करत अब भक्ति-भाव भरि कै।।

उग्र कहावहु उग्र न रञ्च, दुखीन दरिद्रन को अति प्यारी।
पङ्कज नील व भीम कृपाण, गहे कर माँहि करौ रखवारी।।
होहु प्रसन्न बनावहु शीघ्र, महा-कवि पण्डित औ अधिकारी।
पात्र तिहार करौं यह पान, दया-मयि 'तारिणि' मातु हमारी।।२

*दूसरा पात्र स्वीकार कर इष्ट-देवता का ध्यान पढ़ें-

१. श्री काली का ध्यान

गुण-गण-ग्रामा भूरि रूप-राशि-धामा श्यामा, भाल माँ शशि-कला अति अभिरामा है।
एक कर नर-मुण्ड-दूजे माहिं तीक्ष्ण खड्ग, अभय करत तीजो-चौथो वर-दामा है।
महा-काल अङ्क मा है, मुण्ड-माल गल मा है, तीन हूँ विलोचन मा चारुता ललामा है।
श्याम-रङ्गवारी भामा-शम्भु की दुलारी कामा, काम-कला-रूपा मातु कालिका सुनामा है।।

२. श्री तारा का ध्यान

नीलम-सी देह-दुति दमकति चारों ओर, शीश पै अछोभ मूर्ति-ऊँचो करे माथ है।
कर्त्रिका कृपाण भीम भीषण कपाल-पात्र, कमल सुनील लिए जाके चारों हाथ हैं।
गल माँहि मुण्ड-माल, अति विकराल रूप, दीरघ त्रि-नेत्र बने जगती के नाथ हैं।
नीले-नीले कमल पै तारिणी विराजमान, दीनन पै दया करि दौरि देत साथ है।।

३. श्री षोडशी का ध्यान

(क) श्री बाला-त्रिपुर-सुन्दरी का ध्यान

उदित दिवाकर-सों दिव्य देह लाल-लाल, वसन विशेष लाल-लाल दरसत है।
मुख छवि लाल-लाल-तीनों नेत्र लाल-लाल, हाला पिए लाल-लाल-अति हरसत है।
पोथी लीन्हें एक कर - अक्ष-माल एक कर, भीति हरै एक - एक वर बरसत है।
लाल-लाल कमल पै समासीन बाला मातु, भाल पर शशि - कला शुभ्र सरसत है।।

(ख) श्री षोडशी महा-त्रिपुर-सुन्दरी का ध्यान

बाल रवि-सम लाल देह दुति दमकत, वक्ष-भार पाय-पाय लपि-लपि जावै है।
कुंकुम समान रक्त-वसन विशेष सोहैं, भूषण जड़ाऊ अङ्ग छवि सरसावै हैं।
बाण अरु अंकुश व पाश इक्षु-धनु लिए, चारों भुजा सुकुमार पौरुष दिखावै हैं।
तीनों नेत्र मद-भरे शशि-कला चमकति, कमल पै समासीन सुन्दरी सुहावै है।।

४. श्री भुवनेश्वरी का ध्यान

उदित दिवाकर-सों दिव्य देह शोभमान, मुकुट पै चन्द्र-लेखा-छवि छटा छावै है।
अङ्ग-अङ्ग सोहैं चारु भूषण जड़ाऊ भव्य, दीरघ त्रिनेत्र दया-वारि झरि लावै हैं।
एक कर वर देत, अभय करत दूजो, तीजो लिए पाश, चौथ अंकुश दिखावै है।
कमल पै समासीन, भुवना भवानी मोरि, भक्तन को उर लाय, आनँद बढ़ावै है।।

५. श्री छिन्न-मस्ता का ध्यान

काटि निज शीश आप लियो वाम कर माँहि, गरे ते रुधिर-धार बहि चली तीन हैं।
पान करै एक मुण्ड पास खड़ी सखी तिमि, दोउन के पियन में अति लवलीन हैं।
सुर-मुनि-नाग-नर अद्भुत लीला यह, चकित विलोकि रहे बुद्धि भई छीन है।
प्रेत केरे आसन पै समासीन छिन्न-मस्ता, वर-दान भक्तन को देय में प्रवीन है।।

६. श्री भैरवी का ध्यान

कोटि-कोटि बाल-रवि देह-दुति देखि लाजैं, दीरघ त्रिनेत्र चारु छवि-छटा छावै हैं ।
उन्नत उरोजन पै मुण्ड-माल भय-कारी, दुष्टन के दरप को छिन में नसावै है ।
माला लीन्हें-पोथी लीन्हें-पाश औ अंकुशहु, चारों भुजा जाको भव्य गौरव बतावैं हैं।
भैरवी भवानी केरि भावना-विभूति भूरि, ऐसो कौन शक्ति-सेवी जाको नाहिं भावै है।।

७. श्री धूमावती का ध्यान

दीरघ उरोज दोऊ उदर लौं पहुँचत, दशन विरल अति हाथ लीन्हें सूप है।
रथ पर समासीन ध्वजा पर काग राजै, भूख ते कृशित देह मलिन कुरूप है।
काचो मांस पावै खाय विकट कराल नेत्र, भीषण स्वरूप बनो अति ही अनूप है।
धूमा जी को नाम जौन जपत सविधि नित, बनि जात अनायास भूपन को भूप है।।

८. श्री बगलामुखी का ध्यान

पीत-पीत वसन प्रसार करैं देह-छवि, अङ्ग-अङ्ग भूषन सु-पीत झरि लावै हैं।
मुख-कान्ति पीत-पीत, तीनों नेत्र पीत-पीत, अङ्ग-राग पीत-पीत शोभा सरसावै है।
निज भीत भक्तन को जीत देति दौरि आय, अपनो दया को रूप प्रकट दिखावै है।
बगले! तिहार नाम जपत स-भक्ति जौन, भुक्ति पावै-मुक्ति पावै-पीता बन जावै है।।

९. श्री मातङ्गी का ध्यान

नीले-नीले वस्त्र फबैं-साँवरे सुरूप पर, नीले-नीले तीनों नैन-मन्द मुसकावै हैं।
मानिक विभूषन छबीले-छवि छाय रहे, मुख बीरी रङ्ग दै-दै-अधर सजावै हैं।
लाल-लाल रँगे-दोऊ चरन-कमल चारु, भक्त भव्य भावना को-प्रकट दिखावै हैं।
काँधे पर कीर बैठ्यो-इङ्गित करत यह, मातङ्गी मगन बैठी-बीन को बजावै है ।।

१०. श्री कमला का ध्यान

कञ्चन-सी देह-दुति रूप सरसाय रही, बैठी फूले कञ्ज पर सुषमा समानी है।
दुहुन करन माँहि कमल विराजि रहे, दीरघ त्रिनेत्र सोहैं वरदा भवानी है।
दोऊ ओर कुञ्जर विशाल खड़े कुम्भ लीन्हें, सिञ्चत करत रहैं पूरे भक्त प्राणी हैं।
शीश पै किरीट सोहै, चारुता विलोकि मोहैं, कमला भवानी मोरि मातु महरानी हैं।।

***

तीसरी पात्र-वन्दना

आम्नाय सबन की कलानि सों कलित अति, द्योतक कुतूहल को परम महान है।
चन्द्रमा महेन्द्र विष्णु वरुण विरञ्चि शम्भु, सेवत सतत अरु करत बखान हैं।
मोक्ष-अभिलाषी देव-परम मुनीश आदि, धरत सदैव याको चित्त माहिं ध्यान हैं।
आत्म-बोध-दायक तृतीय यहि पात्र कहँ, वन्दन करत जौन सुख को निदान है।।

चन्द्र-कला-द्युति भाल लखात, सु-लोचन तीनि महा-सुख-कारी।
मन्द हँसी हँसि काटहु क्लेश, धरौ धनु-वाण व पाशहु भारी।।
बैठति हौ कमलासन माँझ, भली विधि स्वर्णिम केश सँवारी।
पात्र तिहार करौं यह पान, दया-मयि 'सुन्दरि' मातु हमारी।।३

---

*तीसरा पात्र स्वीकार कर षडङ्ग-न्यास करे।
फिर स्व-शक्ति-रूपा प्रकृति का 'प्रसाद' लेकर चौथी पात्र-वन्दना पढ़े—

चौथी पात्र-वन्दना

सुन्दर सुभग चारु मद्य मीन रस-पूर्ण, हरि-हर-ब्रह्मा आदि पूजा जाकी कीन्ह है।
मुद्रा कुल-सन्ध्या धर्म-कर्म में निरत रहै, क्षार-अम्ल-तिक्त केरे रहत अधीन है।

संसिद्ध भैरव-रूप कुलाचार्य अर्चन ते, न्यासन ते भली विधि शुद्ध कर दीन है।
पाँचहू मकार तत्त्व-सहित सु-पान करै, वन्दौं चौथे पात्र कहँ जामे मन लीन हैं।।

बाल दिवाकर सों छवि-मान, दिपै मुख चारु सदा उजियारी।
चन्द्र किरीट फबै अभिराम, लिए वर अंकुश पाश सँवारी।।
देति नितै वर भक्त विलोकि, हरै सब भीति महा-सुकुमारी।
पात्र तिहार करौं यह पान, दया-मयि 'श्रीभुवनेशि' हमारी।।४

*चौथा पात्र स्वीकार कर 'मूल-मन्त्र' का जप करे। तब 'शक्ति-स्तोत्र' का पाठ करे–

शक्ति-स्तव

सुन्दर रूप भली छवि छाजत, शङ्कर-गेहिनि गौरि तुम्हीं हो।
हो कमला तुम देत सदा धन, त्रास-निवारिणि एक तुम्हीं हो।।
हो भुवना तुम द्वन्द्व-विनाशिनि, भाव-सँवारिनि देवि तुम्हीं हो।
अम्ब-स्वरूप तुम्हीं कुल-कामिनि, तत्त्व-प्रदा-शुचि-रूप तुम्हीं हो।।१
दीनहिं देखि द्रवैं जल लोचन, ऐस दयालु हियौ तव माता।
एक तुम्हीं भव-बन्ध विनाशत, भाव-भरी सुखदा दुख-त्राता।।
पूजन तोर सदा सुख-दायक, हो तुम ही जन-भाग्य-विधाता।।
अम्ब-स्वरूप तुम्हीं कुलकामिनि, को नहिं तो सन जोरत नाता।।२
नैन रहैं करुणा - रस भीजत, बैनन ते टपकै मधुराई।
नेह-भरी अति तोरि विलोकनि, मातु तिहारि भली सुघराई।।
भाव प्रदानत पूत निरन्तर, तोरि दया नित दीखत माई।
अम्ब-स्वरूप तुम्हीं कुल-कामिनि, काहि न तोर दुलार सुहाई।।३
पूजि तुम्हैं सुख पावत को नहिं, को अनुरक्त न होत भवानी।
गान करै तव खोजि सबै गुन, ताहि मिलै सुख लोक-बखानी।।
तोर पुनीत प्रसाद प्रदानत, भुक्ति व मुक्ति सदा मन-मानी।
अम्ब-स्वरूप तुम्हीं कुल-कामिनि, भक्तन की जननी जग-रानी।।४
पूजन में तव वक्र विलोकनि, कैस न साधक को हुलसावै।
पाय तिहार प्रसाद सुधा-रस, को नहिं आपन भाग्य बढ़ावै।।
श्री पद-कञ्ज तिहारि सु-पावन, कौन तिन्हैं नहिं शीश झुकावै।
अम्ब-स्वरूप तुम्हीं कुल-कामिनि, कोपहु तोर सुधा बरसावै।।५

पाँचवीं पात्र-वन्दना

शेष-नाग कुण्डली को सुघर आधार मानि, तापै भूमि-रूपी पात्र सुखद धरत हौं।
सप्त-सिन्धु जल-राशि मदिरा बनत श्रेष्ठ, आठौ दिग्गजन केरि पिसित गहत हौं।

आज्ञाकारी सेवकानि आदित्य-प्रमुख सुर— असुरनि सङ्ग माहिं तिनको लहत हौं।
तारा-गण अक्षतन सों प्रति-दिन सँवारि, भैरव-स्वरूप नित्य पूजन करत हौं।।
आत्मानन्द करत है हिय को अतीव प्रिय, सेवत सुरेन्द्र सदा चित्त को सँभारि कै।
शीघ्र सिद्धि देत अरु महा-भीति दूरि करै, मोक्ष को प्रबोधै आपु भाव को सँभारि कै।
सुन्दर मधुर रस कुल-सन्ध्या केर धारय, लास को प्रदीपै आशु मन को उभारि कै।
वर-दानी सुधा-सिन्धु-परिलुप्त पात्र यह, वन्दौं अब पञ्चम को भावना सँवारि कै।।

कोटिन बाल-प्रभाकर-पुञ्ज, लजै मुख-कान्ति विलोकि तुम्हारी।
हाथ गहे सुठि पुस्तक माल, तथा नव पाश व अंकुश भारी।।
धारति हौ नर-मुण्ड को हार, त्रिलोचनि चारु सदैव सँवारी।
पात्र तिहार करौं यह पान, दया-मयि 'भैरवि' मातु हमारी।।५

***पाँचवाँ पात्र स्वीकार कर 'चक्रार्चन' को हृदयङ्गम करने के लिए 'चक्र-महिमा' का पाठ करे—**

चक्र-महिमा

हरे-हरे पातन की झालरि चहूँधा छाजैं, कोनन में रम्भा-खम्भ सोभा सरसावै हैं।
गजरा विशाल झूमैं ठौर-ठौर सुरभित, पूजा-गृह दीप्ति-मान अति मन भावै हैं।
मध्य में विराज-मान साधकेन्द्र तपो-मूर्ति, मण्डल बनाय वीर-भावना दिखावै हैं।
कौलन की 'चक्र-पूजा' होति अति भाव-मयी, देवता दरस देत आनँद बढ़ावै हैं।।१
आँगनि-प्राकार चारु चारों ओर दमकत, ताके मध्य साधकेन्द्र पूजन-निरत है।
कलश व पात्र सारे थाप्यो विधि-युक्त दिव्य, फूलनि गलीचा जनु सुघर सजत है।
पावक व रवि-सोम-मण्डल प्रदीप्त-मान, पूजा-थल शान्ति-मय ज्योतित करत है।
कौलन की 'चक्र-पूजा' जगर-मगर होति, देखि-देखि वीरन के हिय हुलसत हैं।।२
अङ्गन-सहित यन्त्र-राज पर अम्बिकहिं, पढ़ि मन्त्र भक्ति-युक्त कियो समासीन हैं।
कोटिन प्रभाकर की किरणें थिरकि रहीं, देखि-देखि भए वीर-भाव में लीन हैं।
सब उपचारन ते पूज्यो भरे भाव हिए, आतम-निवेदन स-विधि तहँ कीन्ह है।
कौलन की 'चक्र-पूजा' अति ही रहस्य-भरी, जानै सोई जन जौन बनत न दीन है।।३
बटुक-गणेश-शक्ति आदि पूज्यो विधि-युक्त, भोग को प्रसाद दियो रुचिर सजाय कै।
गुरु-इष्ट पूजि तरप्यो तत्त्व हू विशुद्ध कियो, वाम कर लियो पात्र दक्ष ते छिपाय कै।
वन्दन के साथ-साथ पात्र-पर-पात्र होत, वीर देव-भाव-भरे आनँद बढ़ाय कै।
कौलन के 'चक्र' महँ साम्य-भाव बरसत, अम्बिका दरस देति निज-जन पाय कै।।४
मन्त्र-पूत सीधु-पात्र शुद्धि व तृतीया पुष्प, चणक बटक मुद्रा सामुहे सजाए हैं।
तर्पण करत वीर गुरु-इष्ट-ध्यान धरैं, न्यास करैं मन्त्र जपैं विधि न भुलाए हैं।
वन्दन पढ़त शुचि आहुति प्रदान करैं, चर्वण करत वीर लास - पद्य गाए हैं।
कौलन के 'चक्र' महँ आनँद-विभोर सबै, शिव-रूप धरे सबै भाव को बढ़ाए हैं।।५

पान कै चरणामृत अर्चन प्रपूर्ण कीन, शान्ति-पाठ पढ़ि कियो मङ्गल की कामना।
विश्व में प्रशान्ति छावै सकल निरोग रहैं, जन-जन सुखी होंय ऊँची उठै चाहना।
वीरन को वन्द्य तहँ हिए भरे देव-भाव, उठि चले वीर सबै जहाँ जाको जावना।
कौलन के 'चक्र' महँ तत्त्व को प्रबोध होत, मिलत परम पद सिद्ध होति साधना।।६

***

छठवीं पात्र-वन्दना

चामर व छत्र चारु देत शुभ राज-मञ्च, उदित करत त्यों ही आनँद अपार है।
मनोहारी सुख-प्रद अश्व और हस्ति देत, अतुल साम्राज्य सर्व-अर्थ देन-हार है।
नाना-आधि-व्याधि-हारी भव-अन्धकार नाश, अपर जनम हेतु बनत कटार है।
भैरव व भैरवी को प्रिय-तम मोद-प्रद, ऐसे छठे पात्र प्रति नमन हमार है।।

काटि लियो कर एक में मुण्ड, पियौ निज शोणित-धार सयानी।
दूसरि तीसरि धार तथैव, सखी तहँ पीवत छोड़ि गलानी।।
रूप विभीषण अद्‌भुत मातु, न जानत भेद मुनीशहुँ ज्ञानी।
पात्र तिहार करौं यह पान, दया-मयि 'छिन्ना' हमारि भवानी।।६

---

*छठा पात्र स्वीकार कर 'आनन्द' की स्पष्ट अनुभूति हेतु 'आनन्दोल्लास' का पाठ करे—

आनन्दोल्लास

आनँद-पूरित वीर करैं जब, हास - हुलास व प्रेम दिखावैं।
भौंह तरेर जहाँ कुल-कामिनि, मञ्जुल बैनन ते हरखावैं।।
होत रहै वर पान यथा-विधि, श्रीगुरु-वन्दन को मन भावैं।
मोर तो एक वही शुभ वासर, साधक पूजन में चित लावैं।।१
तर्पन वीरन को मन-भावन, होत स-भक्ति प्रमाद भुलाए।
पीवत कारण पात्र भरावत, साधक-वृन्द बिना सकुचाए।।
चर्वण को वर शुद्धि सु-पाचित, देति सु-गेहिनि मोद बढ़ाए।
मोर तो एक वही शुभ वासर, वीर स-शक्ति जबै घर आए।।२
शक्तिनि कै पद-धूलि सु-पावनि, माथनि लै वर वीर लगावैं।
नाथन केरि विशेष अलौकिक, चारु चरित स-प्रेम सुनावैं।।
आनँद - भाव - भरे अति सुन्दर, गावत गीत प्रमोद बढ़ावैं।
मोर तो एक वही शुभ वासर, जा दिन साधक लास दिखावैं।।३
जा दिन पूजन होत भली विधि, शक्ति व वीर प्रसन्नता भावैं।
ध्यान धरैं छिन पात्र करैं छिन, श्रीगुरु-वन्दन को मन लावैं।।

सीधु सुवासिनि देत पुनः भरि, स्तोत्र पढ़ैं अरु लास दिखावैं।
मोर तो एक वही शुभ वासर, सुन्दर मातु-स्वरूप दिखावैं।।४
होंय धरे घट हेतु भरे बहु, शुद्धि-समूह सु-वासित नीको।
मीन सुपक्व सुभर्जित शोभित, गन्ध लगै जिनकी प्रिय जी को।।
भाव-भरी जब बैठि सुवासिनि, देति सु-पात्र प्रपूर्ण अमी को।
मोर तो एक वही शुभ वासर, और करैं सब ही मन फीको।।५

***

सातवीं पात्र-वन्दना

जाग्रत स्वपन और सुषुप्ति तुरीय परे, चेतना रहित ताको दर्शन करावै है।
विद्युत तपन चन्द्र अनल व ज्योति-कला, जाको दिव्य-रूप चारु विशद बनावै है।
पिङ्गला सुषुम्ना ईड़ावाली कुण्डली-सों युक्त, साधक के मानस को कस न सुहावै है।
सप्तम सुरक्षा करै जौन सप्त-सिन्धु-रूप, तरुणानन्द-दायक सदा सरसावै है।।

लम्ब पयोधर वस्त्र मलीन, रहौ नित ही कर में सूप सँभारे।
भूख कियो अतिं क्षीण शरीर, विलोकनि वक्र रहौ तुम धारे।।
कारण कौन धरौ अस रूप, न जानि सके कवि-पण्डित हारे।
पात्र तिहार करौं यह पान, हरौ दुख 'धूम्र' सदैव हमारे।।७

---

*सातवाँ पात्र स्वीकार कर 'धूमा' ग्रहण करे और श्रीदेवी-पुत्र भैरव की प्रसन्नता हेतु 'श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र' का पाठ करे—

श्री बटुक-भैरव-स्तोत्र

।।ध्यान।।

स्फटिक सरिस सुन्दर तन राजै, कुण्डल मणि-आभा मुख साजै।
दिव्य किङ्किणी मणि मञ्जीरा, नूपुर शोभित चरण सुधीरा।
दिव्य कान्ति चहुँ दिग बगरावै, विषद वसन सुषुमा मन भावै।
परम प्रसन्न बटुक शुभ रूपा, तीन नयन-अति दिव्य अनूपा।
शूल दण्ड दोउ भुजनि विराजै, करि दर्शन हिय कहँ दुख भाजै।
भक्त-इष्ट-प्रद भैरव-नाथा, पुनि-पुनि प्रभो! नवावौं माथा।।

अब 'श्री बटुक-भैरव-स्तोत्र' पढ़ें–

नमो-नमो भैरव सिधि-दाता। भूतनाथ भव-भय तें त्राता।।
भूतात्मा भूतल उजियारे। बटुक भूत-भावन मतवारे।।१
क्षेत्रद क्षेत्रपाल सुर - राटा। क्षत्रिय - वर क्षेत्रज्ञ विराटा।।
जय श्मशान-वासी शुभ-नामा। मांसाशी प्रभु मङ्गल-धामा।।२

नमो खर्पराशी भगवन्ता। जय स्मरान्तक-रूप अनन्ता।।
रक्तप तोहि बहुरि सिर नवावौं। पानप सिद्ध हृदय महँ ध्यावौं।।३
सिद्धिद देव सिद्धि के नाथा। सिद्ध-सुसेवित सेवक साथा।।
जय कङ्काल कुटिल नर-नाशी। काल-शमन जय-सब सुख-राशी।।४
नमो कला-काष्ठा-तनु-धारी। जय-जय कवि सर्वज्ञ सुखारी।।
जय त्रिनेत्र बहु-नेत्र नमामि। पिङ्गल-लोचन शरण व्रजामि।।५
शूल-पाणि जय दीन-दयाला। खड्ग-पाणि जय परम कृपाला।।
कङ्काली तोहि कोटि प्रणामा। जयतु धूम्र-लोचन शुभ नामा।।६
जय अभीरु जय भैरवि-नाथा। भूतप योगिनि-पति शुचि गाथा।।
नमो धनद ऋण-हारी देवा। जय धन-वान विश्व-सुख देवा।।७
जय प्रतिभाग-वान सुर-स्वामी। जय प्रतिभावित अन्तर्यामी।।
नाग-हार तव चरण नमामि। देव! दया-मय सदा भजामि।।८
नाग-केश जय-जय सुर-साईं। व्योम-केश जय प्रभो गुसाईं।।
जय कपाल-भृत, काल कराला। जय कपाल-माली जग-पाला।।९
जय कमनीय कला-निधि त्राता। जयतु त्रिलोचन आनन्द-दाता।।
ज्वलन्नेत्र त्रिशिखी तोहि ध्यावौं। नमो त्रिलोकप-सब सिधि पावौं।।१०
जय त्रिवृत्त-तनय सुख-रासी। जय हे डिम्भ! नित्य अविनाशी।।
जय हे शान्त भक्त वरदाई। डिम्भ-शान्त प्रभु-भक्त सहाई।।११
शान्त-जन-प्रिय दीन-दयाला। नमो बटुक बहु-वेष कृपाला।।
जय खट्वाङ्ग-वर-धारक देवा। भूताध्यक्ष करैं सुख सेवा।।१२
जय-जय पशु-पति भिक्षुक देवा। जय परिचारक-जन-मन-मेवा।।
धूर्त दिगम्बर शूर भजामि। हरिण पाण्डु-लोचन जय स्वामी।।१३
जय प्रशान्त हे शान्तिद शुद्धा। सिद्ध युद्ध-जय-कारी बुद्धा।।
हे शङ्कर-प्रिय-बान्धव नामी। शङ्कर-प्रिय-बान्धव शुभ कामी।।१४
अष्ट-मूर्ति जय देव निधीशा। ज्ञान-चक्षु तपो-मय ईशा।।
अष्टाधार नमो सुर स्वामी। षडाधार जग अन्तर्यामी।।१५
सर्प-युक्त शिखि-सख भूधर जय। जय भूधर-अधीश मङ्गल-मय।।
भूपति भूधर-आत्म प्रदाता। भूधर-आत्मक सब जग-त्राता।।१६
जय कपाल-धारि सुर-नाथा। मुण्डी तोहि नवावौं माथा।।
नाग यज्ञ-पवीत विराजै। आन्त्र-यज्ञ-उपवीत सु-साजै।।१७
जृम्भण मोहन स्तम्भन स्वामी। मारण क्षोभण जग-सुख-कामी।।
शुद्ध-नील-अञ्जन-प्रख्याता। देव दैत्यहा सेवक-त्राता।।१८

मुण्ड-विभूषित छवि सरसाए। सकल सु-मङ्गल-मूल सुहाए।।
बलिभुक् तुम प्रभु बलिभुङ्-नाथा। बाल-अबाल-पराक्रम साथा।।१९
जय सर्वापत् - तारण स्वामी। दुर्ग - रूप प्रभु अन्तर्यामी।।
दुष्ट-भूत-निषेवित देवा। कामी काम-फल-प्रद सेवा।।२०
जयतु कलानिधि कान्त सुनामी। कामिनी-वशकृत तोहि नमामी।।
सकल जगत वशी-कृत नामा। कामिनि-वश-कृत वशी ललामा।।२१
देव जगत-रक्षा-कर जय-जय। अनन्त माया मन्त्रौषधि-मय।।
सर्व-सिद्धि-प्रद वैद्य महाना। हे प्रभ-विष्णु विवेक-निधाना।।२२

।। फल-श्रुति ।।

तुम विभु अखिल विश्व सरसाओ। भक्त-भरण-करि सुयश कमाओ।।१
अष्टोत्तर-शत-नाम-स्वरूपा। कल्प-वृक्ष यह परम अनूपा।।२
जपत जीव सब मङ्गल पावै। सकल कामना तुरत पुरावै।।३
दुरित-भूत-भय-मारी-भीती। जपत मिटै पल में सब ईती।।४
राज-शत्रु-ग्रह-भय नहिं लागै। भैरव-स्तवन करत दुख भागै।।५
दो०- अष्टोत्तर-शत नाम शुभ, जपत धरै नित ध्यान।
तिन कहँ भैरव लाडिले, सदा करैं कल्याण।।

***

आठवीं पात्र-वन्दना

हाथ को कृपाण भारी पैरन को पादुका हु, भाल को तिलक वाक-शक्ति देन-वारो है।
अरिन का वाग-बल शौर्य और कीर्ति नाशै, काय-रक्षा हेतु बनै निपट सहारो है।
इच्छा करै पूरि सारी मनहुँ अचल करै, योषतानिनि को कर्षण करन-वारो है।
आठों सिद्धि-दाता जौन परम प्रताप-रूप, ऐसे पात्र आठवें को वन्दन हमारो है।।
पीत विलोकत होहु प्रसन्न, विपन्न दुखी जन को अति प्यारी।
खैंचि निकारहु शत्रु की जीभ, गिरावहु मारि सु-मुद्गर भारी।।
बुद्धि करौ अरि कै तुम भ्रंश, जितावहु भक्तहिं दोष बिसारी।
पात्र तिहार करौं यह पान, सदा 'वगला' जगदम्ब हमारी।।८

*आठवाँ पात्र स्वीकार करने के बाद 'पानोल्लास-स्तव' का पाठ करे—

पानोल्लास-स्तव

प्रमुदित होत दशौ दिग-पाल क्षेत्र-पाल, शस्त्रन सहित आय आसन धरत हैं।
पूर्ण-गिरि आदि आठों पीठ साजैं नव्य साज, असिताङ्ग आदि होत आनँद-निरत हैं।
ब्राह्मी आदि आठों माता भगा आदि शक्ति-वृन्द, ह्वै कै प्रसन्न अति मोद सों भरत हैं।
अङ्गन-सहित मातु पूजा लेति तृप्त होति, चक्र को यजन जब साधक करत हैं।।१

ज्ञान को प्रकाश होत श्रवत प्रमोद-स्रोत, छाँड़ि कै प्रपञ्च मन थिरता धरत है।
विकसत वर-बुद्धि अहङ्कार मिटि जात, चित्त में अनूठो भाव उमँगि भरत है।
लास को बढ़त ज़ोर जाको नाहिं मिलै छोर, सरस गभीर छन्द आप उचरत है।
आत्म-शक्ति प्रकटति दीखत स्वरूप निज, पान-पर-पान जब साधक करत है।।२
पशुता विलुप्त होति मानव बनत दिव्य, सरसत भव्य गान भाव उमगत है।
दुइ का मिटत भेद मिलत परम पद, जाके हेतु भक्त नित भजन करत है।
तत्त्व का प्रबोध होत बोध-पर-बोध होत, मन का निरोध होत आनँद भरत है।
शिव-रूप मातु-रूप एकाकार होत तबै, शक्ति-पीत शेष जबै मुख में परत है।।३
गुरु-देव वितरत पात्र पर पूर्ण-पात्र, साधक झुकाय शीश विधि सों गहत हैं।
क्रम के जनैया जौन कुलाचारी वीर तौन, मधुर स्वरन गाय वन्दन पढ़त हैं।
अधिक उल्लास पाय गावत कितेक गीत, रस-भरे भाव-भरे मोद को लहत हैं।
तर्पण-निरत अन्य चर्वण करत धन्य, आनँद-तरङ्गनि में केतिक बहत हैं।।४
सरल मनुज कबौं दारुण दनुज कबौं, देवता दयालु कबौं प्रकट अरिष्ट हौं।
विज्ञ कबौं अनभिज्ञ साधु औ असाधु कबौं, शिष्ट औ अशिष्ट कबौं अति ही वरिष्ट हौं।
भूत कबौं अवधूत धूर्त कबौं अनुभूत, मातु को सपूत कबौं गरिमा-गरिष्ट हौं।
सीधु की तरङ्गनि में कथन करत वीर, भोग-मत्त पानासक्त साधक भरिष्ट हौं।।५
ज्ञानी कबौं ध्यानी कबौं जप-अभिमानी कबौं, दानी कबौं मानी कबौं साधक प्रवीन हौं।
लण्ठ कबौं सण्ठ कबौं बन्दनान कण्ठ कबौं, रहत फिरण्ट कबौं भावना-अधीन हौं।
पण्डित महान कबौं मूरख नदान कबौं, सूरमा-प्रधान कबौं छलना-विहीन हौं।
सीधु की तरङ्गन में कथन करत वीर, सिद्ध हू असिद्ध कबौं कौलिक प्रवीन हौं।।६
ब्रह्मा हम विष्णु हम शिव हम शिवा हम, परम पुरुष हम सब कुछ हम हैं।
जोगी हम भोगी हम ढोंगी औ सँयोगी हम, परम वियोगी हम जानैं कुल-क्रम हैं।
गुरु हम इष्ट हम मन्त्र हम यन्त्र हम, परम स्वतन्त्र हम औ रहित भ्रम हैं।
सीधु की तरङ्गन में कथन करत वीर, पूर्ण घट-पायी वीर काहू सों न कम हैं।।७
बाँईं ओर चन्द्र-मुखी कर में सुधा को पात्र, जाको पान किए चारु-चित्त अति हरषाय।
मूर्धा में गुरु को ध्यान होत रहै कमनीय, सुख-प्रद मन माँहि अम्बिका को सौख्य पाय।
कुल-क्रम-जानकार लेत जात नेम-युक्त, एक-एक व्यञ्जन को सरस सु-स्वाद पाय।
सुधा-पान करत जे सन्त-जन युक्ति-युक्त, भुक्ति-मुक्ति तिन्हैं मिलैं आपु ही तैं धाय-धाय।।८
बाँईं ओर बैठी होय रमण-प्रवीण रामा, सुधा सों सु-पूर्ण घट दाएँ हो विराज-मान।
चटक-बटक तथा पूरी हो कचौरी सुठि, सूकर को उष्ण मांस देत हो सुगन्ध-दान।
वीना हू बजत होवे रस-भरी कथा होत, गुरून की महिमा का होत रहै मञ्जु गान।
'कुल-धर्म'-भेद अति गहन न जाने जाहिं, योगी-जन जगत-प्रसिद्ध यहै तत्त्व-ज्ञान।।९

***

मुण्ड-विभूषित छवि सरसाए। सकल सु-मङ्गल-मूल सुहाए।।
बलिभुक् तुम प्रभु बलिभुङ्-नाथा। बाल-अबाल-पराक्रम साथा।।१९
जय सर्वापत् - तारण स्वामी। दुर्ग - रूप प्रभु अन्तर्यामी।।
दुष्ट-भूत-निषेवित देवा। कामी काम-फल-प्रद सेवा।।२०
जयतु कलानिधि कान्त सुनामी। कामिनी-वशकृत तोहि नमामी।।
सकल जगत वशी-कृत नामा। कामिनि-वश-कृत वशी ललामा।।२१
देव जगत-रक्षा-कर जय-जय। अनन्त माया मन्त्रौषधि-मय।।
सर्व-सिद्धि-प्रद वैद्य महाना। हे प्रभ-विष्णु विवेक-निधाना।।२२

।। फल-श्रुति ।।

तुम विभु अखिल विश्व सरसाओ। भक्त-भरण-करि सुयश कमाओ।।१
अष्टोत्तर-शत-नाम-स्वरूपा। कल्प-वृक्ष यह परम अनूपा।।२
जपत जीव सब मङ्गल पावै। सकल कामना तुरत पुरावै।।३
दुरित-भूत-भय-मारी-भीती। जपत मिटै पल में सब ईती।।४
राज-शत्रु-ग्रह-भय नहिं लागै। भैरव-स्तवन करत दुख भागै।।५
दो०- अष्टोत्तर-शत नाम शुभ, जपत धरै नित ध्यान।
तिन कहँ भैरव लाडिले, सदा करैं कल्याण।।

***

आठवीं पात्र-वन्दना

हाथ को कृपाण भारी पैरन को पादुका हु, भाल को तिलक वाक-शक्ति देन-वारो है।
अरिन का वाग-बल शौर्य और कीर्ति नाशै, काय-रक्षा हेतु बनै निपट सहारो है।
इच्छा करै पूरि सारी मनहुँ अचल करै, योषतानिनि को कर्षण करन-वारो है।
आठों सिद्धि-दाता जौन परम प्रताप-रूप, ऐसे पात्र आठवें को वन्दन हमारो है।।
पीत विलोकत होहु प्रसन्न, विपन्न दुखी जन को अति प्यारी।
खैंचि निकारहु शत्रु की जीभ, गिरावहु मारि सु-मुद्‌गर भारी।।
बुद्धि करौ अरि कै तुम भ्रंश, जितावहु भक्तहिं दोष बिसारी।
पात्र तिहार करौं यह पान, सदा 'वगला' जगदम्ब हमारी।।८

*आठवाँ पात्र स्वीकार करने के बाद 'पानोल्लास-स्तव' का पाठ करे—

पानोल्लास-स्तव

प्रमुदित होत दशौ दिग-पाल क्षेत्र-पाल, शस्त्रन सहित आय आसन धरत हैं।
पूर्ण-गिरि आदि आठों पीठ साजैं नव्य साज, असिताङ्ग आदि होत आनँद-निरत हैं।
ब्राह्मी आदि आठों माता भगा आदि शक्ति-वृन्द, ह्वै कै प्रसन्न अति मोद सों भरत हैं।
अङ्गन-सहित मातु पूजा लेति तृप्त होति, चक्र को यजन जब साधक करत हैं।।१

ज्ञान को प्रकाश होत श्रवत प्रमोद-स्रोत, छाँड़ि कै प्रपञ्च मन थिरता धरत है।
विकसत वर-बुद्धि अहङ्कार मिटि जात, चित्त में अनूठो भाव उमँगि भरत है।
लास को बढ़त ज़ोर जाको नाहिं मिलै छोर, सरस गभीर छन्द आप उचरत है।
आत्म-शक्ति प्रकटति दीखत स्वरूप निज, पान-पर-पान जब साधक करत है।।२
पशुता विलुप्त होति मानव बनत दिव्य, सरसत भव्य गान भाव उमगत है।
दुइ का मिटत भेद मिलत परम पद, जाके हेतु भक्त नित भजन करत है।
तत्त्व का प्रबोध होत बोध-पर-बोध होत, मन का निरोध होत आनँद भरत है।
शिव-रूप मातु-रूप एकाकार होत तबै, शक्ति-पीत शेष जबै मुख में परत है।।३
गुरु-देव वितरत पात्र पर पूर्ण-पात्र, साधक झुकाय शीश विधि सों गहत हैं।
क्रम के जनैया जौन कुलाचारी वीर तौन, मधुर स्वरन गाय वन्दन पढ़त हैं।
अधिक उल्लास पाय गावत कितेक गीत, रस-भरे भाव-भरे मोद को लहत हैं।
तर्पण-निरत अन्य चर्वण करत धन्य, आनँद-तरङ्गनि में केतिक बहत हैं।।४
सरल मनुज कबौं दारुण दनुज कबौं, देवता दयालु कबौं प्रकट अरिष्ट हौं।
विज्ञ कबौं अनभिज्ञ साधु औ असाधु कबौं, शिष्ट औ अशिष्ट कबौं अति ही वरिष्ट हौं।
भूत कबौं अवधूत धूर्त कबौं अनुभूत, मातु को सपूत कबौं गरिमा-गरिष्ट हौं।
सीधु की तरङ्गनि में कथन करत वीर, भोग-मत्त पानासक्त साधक भरिष्ट हौं।।५
ज्ञानी कबौं ध्यानी कबौं जप-अभिमानी कबौं, दानी कबौं मानी कबौं साधक प्रवीन हौं।
लण्ठ कबौं सण्ठ कबौं बन्दनान कण्ठ कबौं, रहत फिरण्ट कबौं भावना-अधीन हौं।
पण्डित महान कबौं मूरख नदान कबौं, सूरमा-प्रधान कबौं छलना-विहीन हौं।
सीधु की तरङ्गन में कथन करत वीर, सिद्ध हू असिद्ध कबौं कौलिक प्रवीन हौं।।६
ब्रह्मा हम विष्णु हम शिव हम शिवा हम, परम पुरुष हम सब कुछ हम हैं।
जोगी हम भोगी हम ढोंगी औ सँयोगी हम, परम वियोगी हम जानैं कुल-क्रम हैं।
गुरु हम इष्ट हम मन्त्र हम यन्त्र हम, परम स्वतन्त्र हम औ रहित भ्रम हैं।
सीधु की तरङ्गन में कथन करत वीर, पूर्ण घट-पायी वीर काहू सों न कम हैं।।७
बाँई ओर चन्द्र-मुखी कर में सुधा को पात्र, जाको पान किए चारु-चित्त अति हरषाय।
मूर्धा में गुरु को ध्यान होत रहै कमनीय, सुख-प्रद मन माँहि अम्बिका को सौख्य पाय।
कुल-क्रम-जानकार लेत जात नेम-युक्त, एक-एक व्यञ्जन को सरस सु-स्वाद पाय।
सुधा-पान करत जे सन्त-जन युक्ति-युक्त, भुक्ति-मुक्ति तिन्हैं मिलैं आपु ही तैं धाय-धाय।।८
बाँई ओर बैठी होय रमण-प्रवीण रामा, सुधा सों सु-पूर्ण घट दाएँ हो विराज-मान।
चटक-बटक तथा पूरी हो कचौरी सुठि, सूकर को उष्ण मांस देत हो सुगन्ध-दान।
वीना हू बजत होवे रस-भरी कथा होत, गुरून की महिमा का होत रहै मञ्जु गान।
'कुल-धर्म'-भेद अति गहन न जाने जाहिं, योगी-जन जगत-प्रसिद्ध यहै तत्त्व-ज्ञान।।९

***

नवीं पात्र-वन्दना

सकल आनन्द-प्रद सदा-शिव-पद-वारी, सर्वार्थ-प्रदाता कहँ मन में धरत हौं।
सम्पद साम्राज्य-दाता सर्व-सुख-देन-वारो, अज्ञता-विनाशक को सुख से बरत हौं।
आयु-कीर्ति-यश आदि वर्धन करत जौन, भव-मोह-नाशक को कर में गहत हौं।
लक्ष गुण-वाले चारु प्रौढ़ हू प्रताप-वारे, ऐसे नौम पात्र कहँ अब मैं भजत हौं।।

कीर-छटा सुठि श्यामल रूप, त्रिलोचन चारु सुधा-रस-धारी।
पान चबात रहौ मुसकात, विभूषण अङ्गन के अनुसारी।।
बीन बजावत राग - समेत, रँगे पद-पद्म सु-रक्त सँवारी।
पात्र तिहार करौं यह पान, दया-मयि 'मातङ्गि' मातु हमारी।।९

***नवाँ पात्र स्वीकार कर 'साधना' के मर्म को ठीक-ठीक समझने हेतु 'साधनोल्लास' का पाठ करे–**

साधनोल्लास

पासहि बाल सुलोचनि चारु, सु-सज्जित पाइ मनोभव जागे।
सीधु-भरो घट राजत दिव्य, तथा वर मीन सु-भर्जित आगे।।१
भूधर शुद्धि सु-पक्व सु-सिद्ध, धरे बहु भोज्य भले रस-पागे।
ऐस प्रलोभन हैं भरपूर, कहाँ तब साधन में मन लागे?।।२
श्याम सुलोचनि के पद-कञ्जनि, दै मन पूजन में चित लावै।
सीधु सु-पान करै पल भोजन, श्रीगुरु-पंक्ति व इष्टहिं ध्यावै।।३
भोग लगाय स-मन्त्र भली-विधि, पात्र करै व प्रसादहि पावै।
साधन-मारग एक यही बस, याहि प्रलोभन अज्ञ बतावै।।४
पान सु-पान करैं भरि पेट, तथा वर मांस व मीन उड़ावैं।
हास-विनोद करैं बहु भाँति, प्रपञ्च-भरे बहु राग सुनावैं।।५
शक्तिन केर करैं सतकार, सनेह-भरे अति ही अठिलावैं।
साधन को यह मारग नाहिं, प्रलोभन ही सब भाँति दिखावैं!।।६
सीधु व मांस व मीन विलोकत, बोधत रञ्च न भाव-विभावना।
शक्ति विलोकत चौंकत-खीझत, पानहु केरि वृथा अवमानना।।७
खोजत वन्दन माहिं अनौचित, कुत्सित निन्दित मानस-चाहना।
साधन-मारग एक यही बस, साधक त्यागत या महँ कामना।।८
कुण्डलिनी वर-दायिनि देविहि, कारण लै वर पान करावै।
शुद्धि तृतीय यथा-क्रम पावनि, मुद्रन को नित भोग लगावै।।९
पूजि यथा-विधि श्रीकुल-कामिनि, सोहम-भाव भरै व भरावै।
साधन-मारग एक यही बस, साधक दिव्य सदा अपनावै।।१०

***

दसवीं पात्र-यन्दना

ब्रह्मा-विष्णु -महेश को, देवन को अभिराम। दुर्लभ पावन दशम जो, ताको मोर प्रणाम।।

कञ्चन-सी अति दीपति देह, विराजति पङ्कज पै हरि-प्यारी।
स्नान करावत हस्ति-विशेष, त्रिलोचनि मञ्जुल चारु सँवारी।।
देति रहै दुखियान को दान, सदा उर लाय दया अति भारी।
पात्र तिहार करौं यह पान, दया-मयि 'श्रीकमला' सुकुमारी।।१०

*दसवां पात्र स्वीकार कर जगदम्बा की कृपा की अनुभूति प्राप्त करने हेतु उनकी महिमा का गान करे-

देवी दशक

(१)

दीनन को दुःख दौरि दूरि करै एक तू ही, विश्व माहिं दया-वती एक तू भवानी है।
परम उदार तू है देन में सँकोच नाहिं, आँचर उलटि देति ऐसी महा-दानी है।
प्रीति दै कै भक्ति देत अन्त माहिं मुक्ति देत, भक्तन को हित देखे ऐसी महरानी है।
शरण तिहारि गह्यों द्वारि पै पुकारि रह्यों, और को न हेरौं मोरि तू ही ठकुरानी है।।

(२)

आदि-माया तू ही मातु भ्रम उपजाया तू ही, जगत बनाया तू ही ऐसी राज-रानी है।
कालिका है त्रिपुरा है तारा धूमा तू ही मइया, तू ही दस-रूपा जिन्हें जानैं वर-ज्ञानी हैं।
चण्डिका है अम्बिका है तू ही वरदा कृपाणी तू ही, तू ही सत्य-रूपा अम्ब! तू ही शम्भु-रानी है।
शरण तिहारि गह्यों द्वारि पै पुकारि रह्यों, और को न हेरौं मोरि तू ही ठकुरानी है।।

(३)

विश्व को प्रपञ्च देखि केते अति घबरात, घर छोड़ि बन जात कितनी नादानी है।
केते रहि तामें लिप्त जियत-मरत रहैं, खुशी होत दुखी होत नाहिं बने ज्ञानी हैं!
भारी भ्रम-जाल माहिं फँसे रहैं आठो याम, जानत न अन्त कहाँ भूले सबै प्रानी हैं!
शरण गह्यो हौं मइया! पार तो लगाव नइया, करत पुकारि मोरि तू ही ठकुरानी है।।

(४)

रवि माहिं शशि माहिं नखत-समूह माहिं, जहाँ देखो तहाँ मइया! तू-ही-तू समानी है।
स्थावर में जङ्गम में परवत समुद्र माहिं, कोऊ ऐसो ठाउँ नाहिं जहाँ तू न दिखानी है।
सूक्ष माहिं थूल माहिं अणु-परमाणु माहिं, तोर ही लगी है छाप तू ही ठहरानी है।
शरण तिहारि गह्यों द्वारि पै पुकारि रह्यों, और को न हेरौं मोरि तू ही ठकुरानी है।।

(५)

रवि चलै शशि चलै नखत-समूह चलै, चलत रहत नित जोर-जोर पानी है।
भूमि चलै वायु चलै विश्व माहिं रेला-पेल, चला-चली लखि अणु-गति की कहानी है।
तोर ही प्रसार यह गति-शील जीवन है, गति-हीन काँहि मृत्यु, कविन बखानी है।
शरण गह्यों हौं तोरि माँगौं तोसों कर जोरि, दया करु आय मोरि तू ही ठकुरानी है।।

(६)

तेरो है प्रकृति-रूप यही एक विश्व सारा, जाको नाहिं आदि-अन्त ऐसी तू भवानी है।
याको कहि मिथ्या चहैं रहिबो विलग दूरि, नास्ति को कहैं सत्य केते अभिमानी हैं।
माया को प्रसाद तेरो विज्ञन को अज्ञता में, राखि करै खेला निज तू ही महा-रानी है।
शरण तिहारि गह्यों द्वारि पै पुकारि रह्यों, दया करु आय मोरि तू ही ठकुरानी है।।

(७)

एतो बड़ो विश्व तोरि लीला को अनूप रूप, देख जाको होत नाहिं मुग्ध कौन प्रानी है!
चारों ओर बगरो बसन्त ऐसो नित रहै, खग-मृग करत किलोल मन-मानी है।
यामें पाय अपने को कौन ना कृतार्थ होत, जाके अणु माहिं तू-ही-तू समानी है।
शरण तिहारि गह्यों द्वारि पै पुकारि रह्यों, और को न हेरौं मोरि तू ही ठकुरानी है।।

(८)

तू है सत्य तू है नित्य विश्व हू है सत्य नित्य, बात यह छिपी नाहिं लोगन कै जानी है।
तू है अनन्त तो विश्व हू अनन्त राजै, जानत जहान यह बात हू पुरानी है।
तू है असीम तो विश्व हू असीम दीखै, कहूँ नाहिं भेद कछू शास्त्र हू प्रमानी है।
शरण तिहारि गह्यों द्वारि पै पुकारि रह्यों, और को न हेरौं मोरि तू ही ठकुरानी है।।

(९)

हेतु काहि हितु मानि शुद्धि कर गहि कर, सामुहे तृतीय थापि पूजा चित ठानी है।
मीठे-मीठे मन्त्र पढ़ि यथा-थान मुद्रा मुद्रि, तृप्त करि तृप्त होत जाकी विधि जानी है।
पूजि-अर्चि साधक प्रसाद लेत बार-बार, भक्ति मन माहिं 'तोरि' अति उमगानी है।
जाको देत ऐसो ज्ञान बड़-भागी सोई जन, मो पै तू पसीज मइया! मोरि ठकुरानी है।।

(१०)

तू ही सिद्धि-विद्या मइया तू ही दस महा-विद्या, तू ही नव-चण्डी-मूर्ति बेदन बखानी है।
तू ही तन्त्र तू ही मन्त्र तू ही यन्त्र-राज मइया, तू ही चक्र तू ही पीठ सबमें दिखानी है।
तू ही भुक्ति तू ही मुक्ति तू ही भक्ति अनुरक्ति, तू ही बोध-रूपा जगदम्बिका भवानी है।
शरण तिहारि गह्यों द्वारि पै पुकारि रह्यों, और को न हेरौं मोरि तू ही ठकुरानी है।।

।।फल-श्रुति।।

पढ़ै दशक नित नेम सों, भक्ति-सहित चित लाय। सिद्ध मनोरथ होंय सब, भव-बाधा मिट जाय।।

***

ग्यारहवीं पात्र-वन्दना

अघ-नाशक शान्तिद सुखद, जो सुख-आलय आप्त।
ग्यारह का वन्दन करत, गुरु - सेवा सुख - प्राप्त।।११

*ग्यारहवाँ पात्र स्वीकार कर पात्र-शान्ति कर
'शान्ति-पाठ, वीर-वन्दन, नीराजन' आदि पीछे दी गई विधि के अनुसार करे-

शान्ति-पाठ

फैलि बढ़ै नित शान्ति चहूँ दिशि, मोद-प्रमोद दिखै दिखरावै।
मेल-मिलाप बढ़ै निशि-वासर, क्रूरता भागि छिपै दुरि जावै।।
मातु बनै अनुकूल दया-मय, आपनि जान मया सरसावै।
होंय सुखी सब लोग भली-विधि, दुःख कदापि न रञ्चहु पावैं।।१
मङ्गल लाभ करैं नित साधक, स्वस्थ निरोग सदा दिखरावैं।
बाधक जे ग्रह होंय शुभङ्कर, भावन को दुख मेटि भगावैं।।
लोक-क्रिया सुठि होंय फल-प्रद, जीवन सिद्ध करैं हरषावैं।
होंय सुखी सब लोग भली-विधि, कष्ट कदापि न रञ्चहु पावैं।।२
शान्ति लहैं जड़-जङ्गम-चेतन, जीव समस्त प्रमोद मनावैं।
छाय रहै चहुँ ओर निरन्तर, पूर्ण प्रशान्ति सबै मन-भावैं।।
होय सदैव स-भक्ति प्रपूजन, साधक सुन्दर भाव दिखावैं।
होंय सुखी सब लोग भली-विधि, कष्ट कदापि न रञ्चहु पावैं।।३
कारक विघ्न-प्रतारक दैवत, भूलि कबौं नहिं हाथ उठावैं।
किन्नर यक्ष पिशाच उप-ग्रह, शान्त रहैं नित शान्ति बढ़ावैं।।
साजि महोत्सव सुन्दर व्यापक, सज्जन गायक गीत सुनावैं।
होंय सुखी सब लोग भली-विधि, कष्ट कदापि न रञ्चहु पावैं।।४
विश्व-प्रपञ्च धरे अति सुन्दर, रूप मनोहर छाजन छावैं।
शान्ति-सुधा बरसैं शशि-भास्कर, मङ्गल वाद्य बजैं मन-भावैं।।
साधन होंय सु-सिद्ध फल-प्रद, साधक वन्दन गाय सुनावैं।
होंय सुखी सब लोग भली-विधि, कष्ट कदापि न रञ्चहु पावैं।।५

***

वीर-वन्दन

साधन-सिद्ध प्रवीण कुलज्ञ, सुशील विनीत बड़े उपकारी।
शान्त स्वरूप उदार महान, सुधी अति भावुक श्रेष्ठ पुजारी।।
तन्त्र-विशारद कौलिक भव्य, सु-साधक सङ्गति राखत भारी।
साधक-नायक तोंहि प्रणाम, करौं विधि सौं तुम्हरी बलिहारी।।१

धीर गँभीर सुशील-निधान, प्रमाद-विमुक्त दया उर राखैं।
धर्म-धुरीन तथा कुल-निष्ठ, विनम्र विशेष सदा मृदु भाखैं।।
झूठ न जानत बोलत सत्य, सुखी कुल होय यहै अभिलाखैं।
साधक-नायक तोंहि प्रणाम, उदात्त विचार न भूलिहु भाखैं।।२
घोर निशा लखि होत प्रसन्न, करौ वर-पूजन भाव सँभारे।
पाँचहु तत्त्व भली-विधि पूजि, धरौ नित ही जगदम्ब अगारे।।
शक्तिन वीरन को पुनि अर्चि, प्रसाद गहौ सुठि मन्त्र उचारे।
साधक-नायक तोहिं प्रणाम, करौं विधि-विज्ञ भवानि दुलारे।।३
बैठि मृगासन धारत ध्यान, जपौ निज मन्त्र सु-चित्त लगाए।
मानत केवल कौल-अचार, न जानत अन्य गए कस गाए।।
श्रीगुरु के पद-पङ्कज हेरि, झुकावत शीश प्रमोद बढ़ाए।
साधक-नायक तोहिं प्रणाम, विवेक भरे तुहि एकहि पाए।।४
साधु सुशील सुधी सिर-मौर, सुबोध सुधीर सु-मन्त्र सुनावैं।
मञ्जुल मानव मङ्गल मूर्ति, महा महिमा-मय मातु मनावैं।।
विज्ञ बहुज्ञ विवेचक बुद्ध, विनीत विशेष विशाल बनावैं।
साधक सिद्ध स-भक्ति प्रणाम, सनेह सु-बन्धु सदैव सुभावैं।।५

***

नीराजन

दिव्य प्रकाश दिगन्तन व्याप्त, हरै अँधियार बतावत ज्ञानी।
पावत जानि लहै सुख-मार्ग, भजै तजि मोह वहै जग प्राणी।।
तो सम कौन दया-मयि देवि, दरै दुख-दारिद चित्तहि ठानी।
तोर निराजन भक्ति-समेत, करौं जगदम्ब! दयालु भवानी।।१
साधन में लगि साधक तोहिं, रिझावत भाँतिन भाँति बखानी।
स्थान शरीरहु द्रव्य विशोधि, तथा वर मन्त्रहु इष्ट सयानी।।
या विधि साधत चित्त लगाय, लहै वरदान बनै जन ज्ञानी।
तोर निराजन भक्ति-समेत, करौं जगदम्ब! दयालु भवानी।।२
चौंसठ लै उपचार विशेष, करैं नित पूजन जे जन ज्ञानी।
वन्दन गाय सुनाय रिझाय, बढ़ावत भाव तुम्हैं उर आनी।।
पाँचहु तत्त्वन सों सुठि अर्चि, करैं तुहि तुष्ट सदा चित ठानी।
तोर निरांजन भक्ति-समेत, करौं जगदम्ब! दयालु भवानी।।३
मातु दया-मयि देवि प्रसीद, पुकारत भक्त तुम्हैं उर आनी।
दुःख-निकन्दनि अम्ब प्रसीद, प्रसीद करालिनि चण्डि मृडानी।।

आर्त्त-हरे अति शीघ्र प्रसीद, प्रसीद शुभङ्करि श्रीठकुरानी।
तोर निराजन भक्ति-समेत, करौं जगदम्ब! दयालु भवानी।।४
चारु चरित विचित्र पवित्र, बतावत गावत ध्यावत प्रानी।
तोरि बहोरि करोरि चिरौरि, करै कर जोरि सुनाय कहानी।।
आनँद सों हिय होत प्रपूर्ण, मिलै जब तोरि कृपा रस-सानी।
तोर निराजन भक्ति-समेत, करौं जगदम्ब! दयालु भवानी।।५

***

किङ्किणी स्तोत्र

तेरी याद मात्र से होते, सारे दुःख आप ही दूर।
तेरी पूजा के करने से, सिद्धि हाथ लगती भरपूर।।
तेरे ध्यान-भजन से सत्वर, मिल जाती है कीर्ति ललाम।
जननी धन्य भाग्य है उसका, जो जपता है तेरा नाम।।१
तेरी कृपा-दृष्टि से सारे, भय विह्वल हो जाते भाग।
तेरी पूजा मङ्गल-कारी, मिलता फल जैसा अनुराग।।
विनती करने से इच्छाएँ, फली- भूत सब होती हैं।
आधि-व्याधियाँ इधर-उधर सब, जा-जा करके रोती हैं।।२
परमानन्द ज्ञान-सागर तू, तेज-रूप तेरा है भव्य।
तेरे चरणों पर सिर रखना, सब देवों का पुनीत कर्तव्य।।
ऋद्धि-सिद्धि सब सत्ता तेरी, तू ही करती है उत्पन्न।
पालन और विनाश सभी का, करती तू ही है सम्पन्न।।३
तीनों गुण तुममें हैं सुन्दर, तू भक्तों को प्यारी है।
दिव्य मूर्तिवाली हे माता, विनती एक हमारी है।।
मुझ जैसे साधारण जन की, पूजा जो कुछ है माता।
ग्रहण कीजिए दया दिखाकर, तू है त्रिभुवन की त्राता।।४
तीनों तापों से पीड़ित हूँ, व्याकुल तेरी शरण पड़ा।
तेरे सम्मुख भक्ति-भाव से, करता विनती दास खड़ा।।
नहीं अन्य का नाम कभी भी, कहूँ-सुनूँ या याद करूँ।।
और न तो विनती ही कुछ भी, या चिन्तन ही कभी करूँ।।५
एक-मात्र तेरे चरणों की, लगन लगी मुझको रहती।
देकर सिद्धि करो रक्षा माँ, एक यही मेरी विनती।।
नहीं जानने के कारण से, या प्रमाद-वश बिना विचार।
होकर विकल अधिक या थोड़ी, की पूजा मन में निरधार।।६

इन त्रुटियों को दया दिखाकर, कर दे क्षमा यही बस जान।
अज्ञ पूर्ण हूँ नहीं ज्ञान कुछ, हूँ अजान लेना यह मान।।
न तो यहाँ पूजा- सामग्री, न तो क्रिया का नाम कहीं।
श्रद्धा का अभाव पूरा है, कहता हूँ सब सही-सही।।७
मन्त्र-रहित की सारी पूजा, नहीं छिपी यह तुमसे बात।
छोटी-बड़ी सभी त्रुटियों को, करना क्षमा तुझे है ज्ञात।।
जो कुछ काम किया है मैंने, हो महान चाहे थोड़ा।
मत विचार करना तुम इसका, बढ़िया है या है भोंड़ा।।८
अपनी कुछ पुष्पों की अञ्जलि, यह अर्पित बस करता हूँ।
तेरे विमल पाद-पद्मों में, सिर अपना मैं रखता हूँ।।
माता! बस अब कृपा कीजिए, दास लीजिए अपना मान।
यही कामना केवल मेरी, शीघ्र दीजिए अपना ध्यान।।९

पुष्पाञ्जलि

देखि लजैं मुख कोटिन चन्द्र, प्रभा लखि सूर्य रहैं मुँह डारे।
सुन्दरता झपि जाति विलोकि, रहौ अस रूप सदैव सँवारे।।
शम्भु विरञ्चि तथैव उपेन्द्र, करैं पद-वन्दन आय दुवारे।
श्रीपद-कञ्जनि में कुसुमालि, समर्पित है जगदम्ब! तिहारे।।१
ताप त्रिताप विनासति आपु, दया उर लाय हरौ दुःख सारे।
ज्ञान प्रदान करौ धरि ध्यान, रहौ हित भक्तन को चित धारे।।
देवन में तुम एक दयालु, निजी जन तोहिं सदैव दुलारे।
श्रीपद-कञ्जनि में कुसुमालि, समर्पित है जगदम्ब! तिहारे।।२
विश्व-विधान अमेय महान, रहौ निशि-वासर ताहि सँभारे।
कैसिहु भूल न होन हौ देति, करावत कारज चौकस सारे।।
खेल तिहार अनन्त अपार, न बूझत ब्रह्म सुरेन्द्रहु हारे।
श्रीपद-कञ्जनि में कुसुमालि, समर्पित है जगदम्ब! तिहारे।।३
तत्त्व-परे तुम नित्य अरूप, कहैं गुरु लोग विचारि हमारे।
पै हम जानत मानत तोहिं, रहौ नित नूतन रूप सँवारे।।
भक्तन को चित दै वर देति, करौ निर्भीक बनाय दुलारे।
श्रीपद-कञ्जनि में कुसुमालि, समर्पित है जगदम्ब! तिहारे।।४
ज्ञान-मयी तुम सुन्दर रूप, भजैं बस तोहिं सदा कुल-वारे।
वत्सल भक्तन को नहिं और, रहैं बस केवल तोर सहारे।।
तू जननी जननी बस एक, तुम्हैं बस एक दुखी-जन प्यारे।
श्रीपद-कञ्जनि में कुसुमालि, समर्पित है जगदम्ब! तिहारे।।५

***

'कौल-कल्पतरु' पं० देवीदत्त शुक्ल जी द्वारा संग्रहीत प्राचीन

वैदिक पात्र-वन्दना

ब्रह्माण्ड-मण्डलाकारं, पात्रं नौमि परं सुधाम्।
सुधया पूरितं साक्षात्, आयुर्वित्तं प्रयच्छ मे।।
ॐ इदं ते पात्रं सनबित्तमिन्द्र, पिव सोममेना शत-क्रतो!
पूर्ण आहावो मदिरस्य मध्वोऽयं, विश्व इदभिहर्यन्ति देवाः।।
कुं कुण्डलिनी-मुखे जुहोमि स्वाहा ।।१

द्वितीये त्रिपुरा-पात्रे, शिवोऽहं परि-चिन्तयेत्।
दहन्ति सर्व-पापानि, रुद्र-रूपः प्रजायते।।
ॐ हिरण्य-पात्रं मधोः पूर्णं, ददाति मेधव्यो मानिति एकधा।
ब्रह्मण अपहरति एकं चैव, यजमान आयुस्तेजो दधाति।।
कुं कुण्डलिनी-मुखे जुहोमि स्वाहा।।२

तृतीये भैरवे पात्रे, वीर-वेशो महा-हरिः।
दुरितं विलयं यान्ति, रक्षां कुर्वन्ति सर्वदा।।
ॐ श्रावयेदस्य कर्णा वाज-मेध्यै, जुष्टामनु प्रदिशं मन्द-मेध्यै।
उद्वा जुषाणो राधसे हविष्मान्, करत्र इन्द्रः सुतीर्था भयं च।।
कुं कुण्डलिनी-मुखे जुहोमि स्वाहा।।३

चतुर्थे सोम-पात्रे तु, चन्द्र-सूर्यौ विचिन्तयेत्।
समुद्राः शोषिताः सर्वे, सुखं तिष्ठन्ति केवलम्।।
ॐ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि, ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि।
योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि, अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि।।
अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।। कुं कुण्ड०।।४

गणेशं पञ्चमं पात्रं, सिद्धि-मुक्ति-प्रदायकम्।
गन्ध-पुष्पार्चितं कृत्वा, गङ्गया कृत-निर्मलम्।।
ॐ जात-वेदसे सुनवाम, सोममरातीयतो नि दहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि, विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।
अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।। कुं कुण्ड०।।५

षष्ठं चैवाग्नि-पात्रं तु, मूल-मन्त्राभिमन्त्रितम्।
भस्मी करोतु शत्रूणां, पुत्र-पौत्रादि-वर्द्धनम्।।
ॐ आ कलशा अनूषतेन्दो धाराभिरोजसा।
ऐन्द्रस्य पीतये विश।। कुं कुण्ड०।।६

सप्तमे सागराः सप्त, सप्त-द्वीपा वसुन्धरा।
सप्त व्यवर्तते पुण्यं, अधिष्ठानं करोति च।।
ॐ यस्य ते मद्यं रसं तीव्रं दुहन्त्यद्रिभिः।
स पवस्वाभि मातिहा।। कुं कुण्ड०।।७

अष्टमेऽष्ट-महा-सिद्धिः, नव-निधिः प्रजायते।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्राश्च, सेवितां भुक्ति-भाक् भवेत्।।
ॐ आप्यायस्व समेतु मे, विश्वतः साम वृषण्यम्।
भवा वाजस्य सङ्गथे।। कुं कुण्ड०।।८

नवमे नव-दुर्गास्तु, नव-नाथस्तु संस्तुतम्।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदं लोके, सायुज्यं च स-लोकताम्।।
ॐ मधु-वाता ऋतायते, मधु क्षरति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।
मधुनक्तमुतोषसो, मधु-मत्-पार्थिवं रजः। मधु-द्यौरस्तु नः पिता।।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमान् अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।
कुं कुण्डलिनी-मुखे जुहोमि स्वाहा।।९

पात्र-वन्दना
(कुण्डलिनी-जागरण)

इदन्ता पात्र - सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराऽहन्ता-मये वह्नौ, जुहोमि शिव-रूपिणि!।।

'चक्र-पूजा' के स्तोत्रों को पहले-पहल संग्रहीत कर प्रकाशित करनेवाले

'कौल-कल्पतरु'
पं० देवीदत्त शुक्ल

'कुल-भूषण'
पं० रमादत्त शुक्ल

स्वात्म-मूल-त्रिकोणस्थे, कोटि-सूर्य-सम-प्रभे!
कुण्डल्याकृति-चिद्-रूपे, हुनेद् द्रव्यं स-मन्त्रकम्।।

प्रकाशक : श्रीऋतशील शर्मा, श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-६ ०९४५०२२२७६७